श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती

लेखकः-ज्योतिर्वित्श्रीपण्डितशिवदत्तशास्त्री
व्या० आ० आ० कर्मकाण्डविशारदः

मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम्

आवश्यक वक्तव्य

श्री दुर्गासप्तशती आदि के पाठ व जप आदि में

(१) अध्यायपूर्ति होने पर "श्रीमार्कण्डेयपुराण सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये प्रथमः ॐ तत्सत्" कहना चाहिये। एवमेव द्वितीयः,तृतीयः, चतुर्थः, आदि कहना चाहिये।

(२) इति, अध्याय, वध, तथा समाप्त, इन शब्दों का उच्चारण नहीं करना चाहिए।

(३) अपने हाथ से लिखित तथा ब्राह्मणेतर से लिखित पुस्तक का पाठ नहीं करना चाहिये।

(४) स्तोस्त्र व संहिता ग्रन्थों में अन्तिम श्लोक दोवार पढ़ना चाहिए "स्तोत्रंच संहितायान्तु चान्तःश्लोकंपठेद्द्विधा" इतिरुद्रयामले इसप्रमाण से त्रयोदश अध्याय के समाप्ति में अन्तिम श्लोक दो वार कहना चाहिये।

(५) एवमेव-नमस्कार का जहाँ प्रसङ्ग हो वहां भी दोवार या तीनवार कहना, चाहिए। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यैनमोनमः इत्यादि।

गणना के लिये वस्तुविचार

श्लोक– नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा नधान्यैर्नचपुष्पकैः।

नचन्दनैर्म्र्टत्तिकया जपसङ्ख्यान्तुकारयेत् ॥१॥

लाक्षाँकुसीदं सिन्दूरं-गोमयञ्चकरीषिकम् इत्यादि+अर्थात् चावल-हस्त के पर्व-धान्य-पुष्प-चन्दन-मृत्तिको से जप की गणना नहीं करना चहिये। गोबर की गोली-लाख व सिन्दूर आदि की गोली से जप की गणना करें।

(७) अनेकआचार्य हुये हैं प्रत्येक ने अपने मत को ही क्षेष्ठ मानकर स्पष्ट लिख दिया है कि ऐसा न करने पर पाठ निष्फल हो जाता है। समस्तन्यास

शापो-द्धार-उत्कोलन-मृतसञ्जीवनी जप, कुञ्जिकास्तोत्र, कवच, अर्गला, कीलक पाठ-अन्त में रहस्यत्रयपाठ-वेदोक्त, तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त पाठ-मुद्राप्रदर्शन वेदोक्त पौराणिक व तान्त्रिक विधि से पूजन विधान, नवार्णमन्त्रजप आदि अनेक विधान बतलाये हैं। शायद ही ऐसा कोई सामर्थ्यवान् हो जो सभी विधान करके पाठ पूर्ण कर सके। यदि कोई सब विधान करके पाठ करता है तो वह प्रशंसा के योग्य है। कलियुग में अभीष्ट देवता का गुणगानही शीघ्र समस्त फलदायक होता है। जितना विधान करने में मन प्रसन्न रहे उतना ही करे जितना विधान अधिकयान्यून करना हो उतना सङ्कल्पमें अधिक या न्यूनकर देना चाहिये।

विशेषसङ्केत

श्री तन्त्र दुर्गासप्तशनी, प्रकाशित होने पर जब विद्वानों में वितरण की गई सभी लोगों ने मुक्तकण्ठ से प्रसंसा की तथा जिन लोगों के पास अति प्राचीन हस्त लिखित श्री दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्र, वीजरूप में थे तथा बम्बई तथा वाराणसी में प्राचीन समय में ७०० मन्त्रतन्त्र रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। जिन लोगों के पास थे प्रायः अधिक लोगों ने देखने के लिए मेरे पास भेजे तथा ला कर दिये मैंने अपनी मुद्रित पुस्तक से मिलान किया प्रायः सभी मन्त्रों का मिलान एक सा रहा। कुछ ही मन्त्रों में अन्तर निकला। अधिक प्रतियों से उनका मिलान करके संशोधन कर दिया है।

पाठक गण यथेच्छ कोई भी मन्त्र का पाठ या जपकर सकते हैं। सभी वीजमन्त्र शुद्ध हैं। प्राप्त प्रतियों में भी स्थान स्थान में लिखा था कि कवचित् पाठभेदः अर्थात् वीजमन्त्रों में भेद लिखे थे। अतः सभी मन्त्र शुद्ध जानना चाहिये। यदि मेरी मुद्रित पुस्तक में संशोधित वीजमन्त्रों का पाठ या जप न करके वैसे ही पाठ या जप में प्रयोग किये जांये तो भी सिद्धिप्रद होंगे। क्वचित् पाठभेद, लिखकर वे भी मन्त्र लिखे थे। कुल १० या १२ मन्त्रों में परिवर्तन है।

विशेष आवश्यक निवेदन

तन्त्रदुर्गासप्तशती के पाठ में कवच अर्गला कीलक का पाठ तथा मृतमञ्जीवनी विद्यामन्त्रजप-कुञ्जिकास्तोत्रपाठ-रहस्यत्रय-पाठ आदि करने की कोई भी आवश्यकता नहीं हैं केवल आदि में तथा अन्त में यथेच्छ (न्यूनसे न्यून १०८ वार) नवार्णमन्त्र जप परमावश्यक है। यही सिद्धान्त महात्माओं व विद्वद्वन्द में तथा प्रकाशित एवं हस्तलिखित प्रतियों में निश्चित है।

भ्रम निवारण

(१) श्री तन्त्र दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों में "ऐं" इस बीज का का प्रयोग किया गया है। यह शङ्का पाठक जनों ने की थी इसका समाधान तन्त्र कोष में सुस्पष्ट है कि—'ऐं' यह बीज अनेक शक्तियों का बीज है सरस्वती के बीज की तरह 'दुर्गा' का प्रधान बीज होने से 'ऐं' इस बीज का प्रयोग प्रति मन्त्र में किया गया है। इसके अतिरिक्त और जो रहस्य हो वह विद्वद्वृन्द जाने। नवार्ण मन्त्र में "ॐ" नहीं लगाना चाहिए विशेष निर्णय आगे लिखा है।

(२) जहां पर अनेक व्यञ्जन मिले हों उच्चारण में न आरहे हों वहाँ पर सभी व्यञ्जनों को सस्वर की तरह कहना चाहिये-यथा अध्यापके १०-मन्त्र ३२ "ओंस्ज्स्ह्ल्रांनमः" यहाँ ४ व्यञ्जन है तो पूरे २ अक्षर पढ़ना चाहिये—जसहलरांनमः। इति

प्राक्कथन

यह तन्त्र रूप में परिणत श्रीतन्त्र दुर्गासप्तशती, संवत् २००० आश्विनमास में विन्ध्याचल (जि० मिर्जापुर उ०प्र०) में भगवती जगन्नियन्त्री जगदम्बा श्री विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शनार्थ आये हुये एक महात्माजी की अति प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से लिखने के लिये उनतपो मूर्ति महात्मा जी की ~~प्रार्थना की~~ विशेष प्रार्थना करने पर लिखने की आज्ञा पाकर लिखकर तथा बहुत समय

तक अनुभव करके सत्य प्रतीत होने पर प्रकाशित करने पर विद्वानों ने भी पूर्ण रूप से अनुभव किया तथा सफल हुये, अतएव प्रथमावृत्ति शीघ्र समाप्ति हुई। एवम्-द्वितीयावृत्ति शीघ्र समाप्ति हुई।

महात्मा एवं विद्वानों ने यह आज्ञा दी कि तृतीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित की जाये कि जिस में पाठ करने योग्य श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती तथा संशोधित व पर्वद्धित परमोपयोगी विषय भी रक्खें जायें। उन्हीं महात्माओं एवं विद्वानों की आज्ञानुसार तृतीयावृत्ति भी उसी रूप में प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर समर्पित है। प्रथमावृत्ति वितरित होने पर दयालु महात्मा एवं विद्वानों ने अतिप्राचीन हस्तलिखित तन्त्र रूप में परिणत दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्र दिखलाये तथा बम्बई व वाराणसी से प्रकाशित प्रतियां भी देखने में आई। प्रायः सभी मन्त्र मेरे प्रकाशित मन्त्रों से अक्षरशः मिले मुझे विशेषसन्तोष प्राप्त हुआ। कुछ मन्त्रों में अन्तर निकला बहुत मत से संशोधित करके प्रकाशित हैं। यह मैं नहीं कह सकता हूँ कि श्री दुर्गा-सप्तशती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत किस मूलाधार से है इतना अवश्य है कि पाठ व जप करने से सभी प्रयोग सफल होते हैं।

सङ्केत—इस पुस्तक में तन्त्र मन्त्रों से अतिरिक्त सभी विषय अन्यान्य प्रमाणित ग्रन्थों से लिये हैं। श्रीकुमुदेशचन्द्र जी जैन मकान नं० ४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज कानपुर की विशेष प्रार्थना पर यह पुस्तक प्रकाशित करने को दी। श्री कुमुदेश चन्द्रजी भगवती श्रीदुर्गादेवी के परम भक्त हैं कामाख्या आदि स्थानों में सुचारुरीति भ्रमणकर चुके हैं आपने ही मेरा लिखित "श्री शिवसूत्ररहस्यम्" नामका ग्रन्थ प्रकाशित किया है जो अभी तक प्रकाशितन था अर्थात् जिसमें अइउण्, आदि १४ सूत्रों में ज्योतिष शास्त्रवतन्त्र मन्त्र आदि विषय विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं।

सुजन समुदाय से नम्रनिवेदन है कि यदि दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत करने का मूलाधार ज्ञात हो तथा इस पुस्तक में जो मुद्रण आदि दोष रह गये हों तो अवश्य सूचित करने की कृपा करें ताकि अग्रिम संस्करण में उनका सुधार हो सके।

* श्रीमद्गुरवेनमः *

(श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीलेखकः)

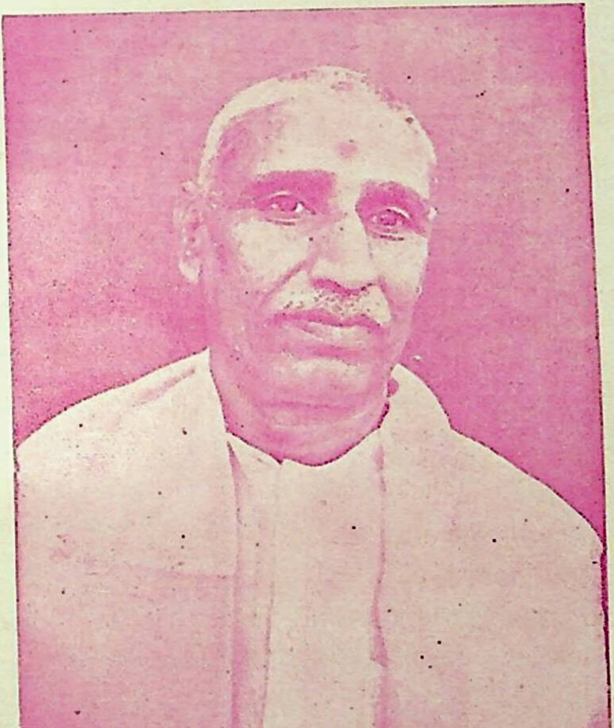

'श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती' 'श्रीगुरुस्तोत्रं' व श्रीशिवस्तोत्र आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता, एवं श्रीशिवसूत्ररहस्य आदि ग्रन्थ लेखक-प्रवक्ता-ज्यौतिष-व्याकरण-तन्त्रसाहित्य-धर्मशास्त्र आदि के अति सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातः स्मरणीय श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

यदत्रस्खलितङ् किञ्चित् प्रमादेन भ्रमेणवा ।
तत्सर्वं शोधयन्त्वार्याः कस्यन स्खलितम्मनः ॥१॥
गच्छतः स्खलनङ् क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥२॥

विनीत—**शिवदत्त शास्त्री**

प्रसङ्गवशश्रीदुर्गासप्तशती के पाठ में आवश्यक संकेत—

कवच, अर्गला, कोलक के पूर्व शापोद्धारउत्कीलन तथा मृत संजीवनी विद्या का जप का विधान है, किन्तु विद्वत्परम्परा का सिद्धान्त यह है कि यदि श्री दुर्गासप्तशती का षडङ्ग (कवच, अर्गला[२], कीलक[३] तथा त्रयोदशाध्याय के बाद रहस्यत्रय) सहित पाठ कर लिया जाय तो श्रीदुर्गासप्तशती में शापोद्धारादि की कोई भी आवश्यकता नहीं है। वस्तुतः यही मत हमारी भी गुरुपरम्परा का है। अथवा जैसा विद्वद्वृन्द निर्णय करें वैसा स्वेच्छानुसार करें। यह निर्णय दुर्गासप्तशती के पाठ ही का है तन्त्र दुर्गासप्तशती के पाठ में षडङ्ग पाठ भी नहीं करना चाहिये।

शापोद्धारमन्त्र—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रांक्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त में ७ बार जपे।

उत्कीलनमन्त्र—ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशतिचण्डिके उत्कीलनंकुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त में २१ बार जपे।

मृतसंजीवनीविद्यामन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनिविद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा। आदि तथा अन्त में ७-७ बार जपे।

सङ्केत—मरीचकल्प तथा रुद्रयायलान्तर्गत दुर्गाकल्प में चन्डिकाशाप-विमोचन विधान भिन्न-भिन्न क्रम से लिखा है। श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती में षडङ्ग-पाठ करने की आवश्यकता नहीं है। आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र जपना आवश्यक है।

विशेष आवश्यक सङ्केत

जिस स्थान में भगवती देवी की मूर्ति हो वहां श्रीदुर्गा पूजा यन्त्र आदि कुछ भी विधान की आवश्यकता नहीं है। वहां तो भगवती ही यन्त्रादि रूप में वर्तमान है। एवं जहां शतचण्डी आदि अनुष्टान करना या करवाना हो वहां तथा जहा भगवती की मूर्ति न हो वहां समस्त विधान शत्त्यनुसार करे। दैनिक पूजन पाठ व जप में समस्त विधान की आवश्यकता नहीं है।

कलयुग में अभीष्ट देवता का गुणगान ही समस्त कल्याण प्रद होता है। विशेष विधान के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। केवल श्रद्धा-विश्वास तथा मनकी एकाग्रता ही प्रधान मानी गई है। प्रत्येक अनुष्ठान-पूजन व जप आदि में शास्त्र-देश-काल व अपनी सामर्थ्य देखकर के ही प्रवृत्त होना चाहिये।

श्रीदुर्गासप्तशती में कवच

शूलेनपाहिनो देवि पाहिखङ्गेनचाम्बिके।
घण्टास्वनेननः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥१॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥२॥
सौम्यानियानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानिचात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥३॥
खङ्गशूलगदादीनियानिचास्त्राणितेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनितैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥४॥

कवच के तन्त्र रूप में क्रमशः मन्त्र—

ॐ ऐं फ्रें नमः ॥१॥ ॐ ऐं क्रीं नमः ॥२॥ ॐ ऐं म्लूं नमः
ॐ ऐं घ्रें नमः ।

शारदातिलक पञ्चमपटल में हवन वस्तुयें

१– अध्याय– गुग्गुल वा विल्वफलहोम (तृतीयांश होम करना चाहिये)
२– " इक्षु (ऊँख) का हवन । पर्वमात्र प्रतिआहुति में हवन ।
३– " ३८वें मन्त्र में मधु । अध्यायान्त में नार (नारंगी) हवन ।
४– " लवंग हवन ।
५– " कदलीफल (केला की फलों का) हवन ।
६– " गुग्गुल होम वा जम्बीर फल (नीवू) का हवन ।
७– " २३वें मन्त्र में काला जीरा हवन ।
८– " रक्तवीज प्रसंग में रक्त चन्दन हवन । अध्यायान्त में तज का हवन ।
९– " २६वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) का हवव । अन्त में कर्पूर-कस्तूरी हवन ।
१०– " २६वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) का हवन । अन्त में जावित्री-लवंगदाडिमफलहोम ।
११– " पायस (खीर) पूप (पुआ) हवन । ३९वें मन्त्र में कालीमिर्च हवन ।
१२– " कर्पूरदाडिमहवन ।
१३– " श्रीफल-कुङ्कुमहोम ।

सङ्केत—उपरिलिखित कवच के चार मन्त्रों में हवन नहीं करना चाहिए ।

।। प्रतिअध्याय की समाप्ति में हवनक्रम ।।

प्रथमाध्यायान्ते – ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्
"ॐ श्रीक्लींह्रींह्रींफट्स्वाहा"
साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै वाग्भववोजाधिष्ठायै महाकाल्यै महाहुतिसमर्पयामिनमः-स्वाहा ।

द्वितीयाध्यायान्ते – ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ अम्बालिके नमानयति कश्चन । इत्यादि–
"ॐ ऐं क्रीं क्रां सौंसः फट् स्वाहा"
ॐ साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै हृल्लेखावीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।

तृतीयाध्यायान्ते – ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके नमानयति कश्चन । इत्यादि–
"ॐ ह्रीं श्रीं कुं फट्स्वाहा" ओंसाङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै हृल्लेखावीजाधिष्ठात्र्यैमहालक्ष्म्यै महाहुतिसमर्पयामिनमः स्वाहा ।

चतुर्थाध्यायान्ते – ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके–इत्यादि ।।
ओम्–"अं ह्रीं हंसःफट्स्वाहा" ओंसाङ्गा-

यैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै हृल्लेखाबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिंसमर्पयामि नमः स्वाहा ।

पञ्चमाध्याया ते — ओम् अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके-इत्यादि साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायैकामबीजाधिष्ठात्र्यै महासरस्वत्यैमहाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।

षष्ठाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके--इत्वादि सर्वम् ।

"ॐ यह्रींक्लींह्लींफट्स्वाहा' ॐ साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै महासरस्वत्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।

सप्तमाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके-इत्यादि सर्वम् ।

' ॐ रंरंरंकंकंजंजं चामुण्डायैफट्स्वाहा" ओ साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै-इत्यादि सर्वंपञ्चमाध्यायान्तवत् ।

अष्टमाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके-इत्यादि सर्वम् ।

"ॐ शांसंश्रींश्रंअअःक्लींह्लीं फट्स्वाहा" ओं साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै-इत्यादि सर्वंपञ्चमाध्यायान्तवत् ।

नवमाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके-इतयदि ।

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौं फट्, स्वाहा" ॐ साङ्गायैसपरिवारायै-इत्यादि सर्वमेव पञ्चमाध्यायान्तवत् ।

दशमाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽअम्बिके-इत्यादि सर्वम् ।
ओम् ऐं ह्रीं नमः क्लीं ह्रीं फट्स्वाहा"
ॐ साङ्गायै सपरिवारायै-इत्यादि सर्वमेव पञ्चमाध्यायान्तवत् ।

एकादशाध्यायान्ते-- ओम् अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके-इत्यादि सर्वम् ।
'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सौं नमः फट्स्वाहा"
ॐ साङ्गायैसपरिवारायै-इत्यादि सर्वमेव पञ्चमाध्यान्तवत् ।

द्वादशाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके—इत्यादि सर्वम् ।
"ॐ यं यं यं रं रं रं ठं ठं ठं फट् स्वाहा"
ॐ साङ्गायैसपरिवारायै—इत्यादि सर्वमेव पङचमाध्यायान्तवत् ।

त्रयोदशाध्यायान्ते -- ओम् अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके-इत्यादि
ॐ अम्बऽअम्बिके—इत्यादि स्वाहा ।
ओं साङ्गायैसपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।

प्रकाशकोय वक्तव्य

(तृतीया वृत्ति पर)

यह प्रसंग अनेकों बार महात्माओं से सुना था कि ७०० श्रीदुर्गासप्त-ाती के मन्त्रों का तन्त्र रूप में वर्णन है, किन्तु विशेष अन्वेषण करने पर ाथा कामख्या आदि स्थानों में भ्रमण करके पता लगाने पर भी तन्त्र रूप में ७०० मन्त्र श्री दुर्गासप्तशती के नहीं मिले। इतना होने पर भी अन्वेषण करने का प्रयत्न बराबर बना ही रहा था एक समय परम पूज्य श्री १०८ ुरुदेव श्री पं० शिवदत्ताजी त्रिपाठी शास्त्री ज्योतिर्वित्-कर्मकाण्ड विशारद याकरणायुर्वेदाचार्य-श्री शिवसूत्ररहस्यम् आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक प्रवक्ता ी तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों का विवरण पूछा तो उन्होंने लिखित पुस्तक मुझे दिखलाई थी मैंने मुद्रण करने के लिए उनसे विशेष प्रार्थना की उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके वह पुस्तक दी आज ुस्तक तृतीयावृत्ति में भी प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में मादर मर्पित है। पुस्तक का कोई मूल्य नहीं हैं प्रेम से भगवती को सुनाना ही इसका मूल्य है।

नम्र निवेदन यह है मानवता स्वभाववश अशुद्धियों का होना स्वाभाविक है जहाँ जो भी अशुद्धि रह गई हो तथा यन्त्रादि दोष हों वहाँ सुधार लें तथा ूचित करने की कृपा करें। ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हों सके। पुस्तक को निःशुल्क समझकर दुरुपयोग न करने का ध्यान रहे। प्रकाशक एवम् लेखक के परिश्रम को सफल बनाने की कृपा रहे।

संकेत—इस पुस्तक में केवल त्रयोदश अध्याय ही श्री तन्त्ररूप में परि-णत दुर्गासप्तशती, के श्रीमान् पूज्य श्री १०८ श्री पं० शिवदत्ताजी शास्त्री को किसी सिद्ध महात्माजी की अतिप्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से प्राप्त हुये थे। ेष अन्य सभी विषय श्रीमान् श्री परमपूज्य शास्त्री जी ने अन्याय प्रमाणित ग्रन्थों से लिखकर पूर्ण मिये हैं।

भवदीवानुचरः

कुमुदेशचन्द्र जैन

-

।। आदिशक्तयेनमः ।।

।। श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ।।

विश्वेश्वरींविश्वमयींविरूपा-
मज्ञानहन्त्रींविमलस्वरूपाम् ।
शश्वत्प्रसन्नाङ्करुणावतारान्-
तन्त्रस्वरूपाञ्चनमामिदुर्गाम् ।।१।।

चिदानन्दरूपे हरीशादिबन्द्ये-
सदामन्दहासे जगद्भीतिनाशे ।
चिदानन्ददेत्वञ्च तन्त्रस्वरूपे-
जनं पाहिदीनन्तवार्चाविहीनम् ।।२।।

नजानातिविष्णुःशिवोनैववेत्ति-
स्वयम्भूः स्वयन्नैवजानातिमातः ।
चरित्रन्दयाधारिकेतेविचित्रङ् -
कथन्मन्दबुद्धिर्जनःस्यात्समर्थः ।।३।।

तथाप्यम्बलोकोपकारायलोके-
चरित्रंवदाम्यत्रकिञ्चित्प्रसिद्धम् ।
तवप्रेरणैवाभवद्हेतुभूता-
मदीयेहृदब्जेमहादेविदुर्गे ।।४।।

॥ पाठविधि ॥

साधक स्नान करके पवित्र हो आसन शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके पूर्वाभिमुख हो शुद्ध आसन पर बैठे साथ में शुद्ध जल (गङ्गाजल आदि) पूजन सामग्री और श्री तन्त्रदुर्गा सप्तशती की पुस्तक रक्खे । मस्तक में अपने रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन, रोली अथवा सेंदूर लगा लें । शिखा बांध लें । तत्व शुद्धि के लिए चार बार आचमन करें । तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरूजनों को प्रणाम करें । कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, चावल और जल लेकर निम्नांकित रूप से संकल्प करें ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: । ॐ नम: परमात्मने, श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्राह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धेश्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशति-तमेकलियुगेकलिप्रथमचरणेजम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे अमुकायने अमुकमाङ्गल्यप्रदे मासानामुत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवा-सरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकरा-शिस्थितेष् चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभक-रणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तिकाम: अमुकगोत्रोत्पन्न: अमुक शर्माहं ममात्मन: सपुत्रबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत

राजकृतादि सर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकन्नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टि धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्मार्थ काममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धि द्वारा श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं तन्त्रोक्तरात्रिसूक्त पाठन्यास विधि सहित नवार्णजप तान्त्रिकसप्तशती न्यासध्यान पूर्वकञ्च "ॐ ऐं श्रींनमः ॐ ऐं ह्रीं नमः। इत्याद्यारभ्य ॐ ऐं ओंनमः इत्यन्तन्तन्त्ररूपेण परिणतं श्रीतन्त्रदुर्गाशिप्तशती पाठं तदन्ते च न्यास विधिसहित नवार्णजपतान्त्रिक सप्तशती न्यासध्यान पूर्वकं तान्त्रिक देवीसूक्त पाठञ्च करिष्ये।

(यदि दूसरे से पाठादि कर वाना हो तो कारयिष्ये, कहना चाहिए)

इस प्रकार संकल्प करके भगवती श्री दुर्गादेवी का ध्यान करते हुए पञ्चोपचार विधि से पुस्तक की पूजा करें। यदि ज्ञात हो तो योनिमुद्रा प्रदर्शित करके भगवती को प्रणाम करें। पश्चात् नवार्णमन्त्र से पीठ में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करें। पश्चात् यदि ज्ञात हो तो अन्तर्मातृका वहिर्मातृका आदिन्यास करें अन्यथा नहीं। पश्चात् भगवती का ध्यान व पूजन आगे लिखित श्री दुर्गा पूज यन्त्र में करें।

॥ अथषोडशोपचारदुर्गापूजनविधिः ॥

संकल्पः– ॐअद्येत्यादिमम "अमुकगोत्रोत्पन्नयजमानस्य" इह जन्मनिसर्वापच्छान्तिपूर्वकंदीर्घायुर्विपुल पुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभशत्रु-

पराजय प्रमुख-प्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थंसिद्धये श्रीदुर्गा पूजन महंकरिष्ये (कारयिष्ये) ।

ध्यानम्– ॐ विद्युद्दामसमप्रभांमृगपतिस्कन्धस्थितांभीषणां
कन्याभिःकरवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितामहस्तै-
श्चक्रगदासिखंटविशिखांश्चापं गुण तर्जनींविभ्राणा-
मनलात्मिकांशशिधरांदुर्गा त्रनेत्रांभजे ॥

अर्थ :– मैं भगवती दुर्गादेवी का ध्यान करता हूँ–जो तीन नेत्र वाली हैं जिनके अंगों की प्रभा बिजली के समान है । सिंह के कन्धे पर भयंकर प्रतीत होती हैं, अनेक कन्यायें जिनकी सेवा में लगी हैं । जिनके हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, वाण, धनुष पाश और तर्जनीमुद्गर शोभायमान हैं । जो अग्निमय हैं तथा जो अपने माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करती हैं ।

आवाहनम्–आगच्छवरदेदेवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
पूजांगृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥

आसनम्–अनेकरन्तसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनंप्रतिगृह्यताम् ॥

पाद्यम् :–गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाप्रार्थया हृतमू ।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यतान् ॥

अर्घ्यम्– गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितंमया ।
गृहाणत्वंमहादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥

आचमनम्–आचम्यतांत्वयादेवि भक्ति मेह्यचलांकुरु ।
ईप्सितंमेवरं देहि परत्रचपरांगतिम् ॥

स्नानम्—जाह्नवीतोयमानीतंशुभंकर्पूरसंयुतम् ।
स्नापयामिसुरश्रेष्ठेत्वांपुत्रादिफलप्रदाम् ।।

पञ्चामृतस्नानम्—पयोदधि घृतं क्षौद्रं सितयाच समन्वितम् ।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरुस्नानं महेश्वरि ।।

शुद्धोदकस्नानम्—परमानन्दवोधाब्धिनिमग्नानिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदंस्नानंकल्पयामिसुरेश्वरि ।।

वस्त्रम्— वस्त्रंचसोमदैवत्यंलज्जायास्तुनिवारणम् ।
मयानिवेदितंभक्त्या गृहाणपरमेश्वरि ।।

उपवस्त्रम्— यामाश्रित्यमहामाया जगत्संमोहिनीसदा ।
तस्यैवैपर मेशापैकल्पयाम्युत्तरीयकम् ।।

मधुपर्कम्— दधिमध्वाज्यसंयुक्त पात्र युग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कंगृहाणत्वं वरदा भवशोभने ।।

गन्धम्— परमानन्द सौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ।।

कुङ्कुमम्—कुङ्कुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीदपरमेश्वरि ।।

आभूषणम्—हारकङ्कणकेयूर मेखला कुण्डलादिकम् ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रति गृह्यताम् ।।

सिन्दूरम्—सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
पूजितासि मयादेवि प्रसीद परमेश्वरि ।।

कज्जलम्- चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारके ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥
सौभाग्यद्रव्यम्–सोभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुते ।
कण्ठेवध्नामिदेवेशि सौभाग्यं देहिमेसदा ॥
सुगन्धि तैलम्–चन्दनागरु कर्पूरकुङ्कुमं रोचनंतथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम् ॥
परिमलद्रव्यम्–हरिद्रारञ्जितेदेवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात् त्वां पूजयाम्यद्यसुखंशान्तिप्रयच्छमे ॥
अक्षतान्–रञ्जिताकुङ्कमौघेनअक्षताश्चातिशोभनाः ।
मामेषांदेविदानेन प्रसन्नाभवशोभने ॥
पुष्पाणि–मन्दारपारजातादि पाटलीकेतकानिच ।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥
पुष्पमालाम्–सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रंथितांपुष्पमालिकाम् ।
ददामितवशोभार्थंगृहाणपरमेश्वरि ॥
विल्वपत्रम्–अमृतोद्भवश्रीवृक्षो महादेविप्रियः सदा ।
विल्वपत्रंप्रयच्छा मिपवित्रंतेसुरेश्वरि ॥
धूपः– दशाङ्गंगुग्गुलंधूपंचन्दनागरुसंयुतम् ।
समर्पितंमयाभक्त्या महादेविप्रगृह्यताम् ॥
दीपः— घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजोमहोज्वलम् ।
दीपंददामिदेवेशि सुप्रीताभवसर्वदा ॥
नैवेद्यम्–अन्नंचतुर्विधंस्वादुरसैःषड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यंगृह्यतांदेविभक्तिं मेह्यचलांकुरु ॥

ऋतुफलम्—द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादिफलानिप्रतिगृह्लताम् ॥

आचमनम्—कामारिवल्लभेदेविकुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहंवन्देचरणौतत्र चण्डिके ॥

अखण्ड-ऋतुफलम्—नारिकेलञ्चनारंगंकलिङ्गंमञ्जिरंतथा ।
उर्वारुकंचदेविशिफलान्यैतानिगृह्लताम् ॥

ताम्बूलपूगीफलानि-एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैःपुष्पवासिताम् ।
वीटिकांमुखवासार्थमर्पयामिसुरेश्वरि ॥

दक्षिणा—पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रेस्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितंतेनमेप्रीतापूर्णान्कुरुमनोरथान् ॥

प्रार्थना—सर्वस्वरूपेसर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
पूजांगृहाणकौमारिजगन्मातर्नमोस्तुते ॥

आरतिकम्—नीराजनंसुमाङ्गल्यंकर्पूरेणसमन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेविनमोस्तुते ॥

पुष्पाञ्जलिः—दुर्गेस्मृताहरसिभीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैःस्मृतामतिमतीवशुभांददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणिकात्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

प्रदक्षिणा—नमस्तेदेविदेवेशि नमस्तेईप्सितप्रदे ।
नमस्तेजगतांधात्रि नमस्तेभक्तवत्सले ॥

साष्टाङ्गप्रणामः—नमःसर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयंप्रणाम स्तुप्रयत्नेनमयाकृतः ॥
प्रार्थना—पुत्रान्देहिधनं देहि सौभाग्यं देहिमङ्गलं ।
अन्यांश्चसर्वकामांश्च देहिदेवि नमोस्तुते ॥
विसर्जनम्—इमांपूजांमयादेवियथाशक्त्या महेश्वरि ।
रक्षार्थंत्वंसमादायव्रजस्थानयथोत्तमम् ॥

श्रीदुर्गादेवीपूजनयन्त्रम्

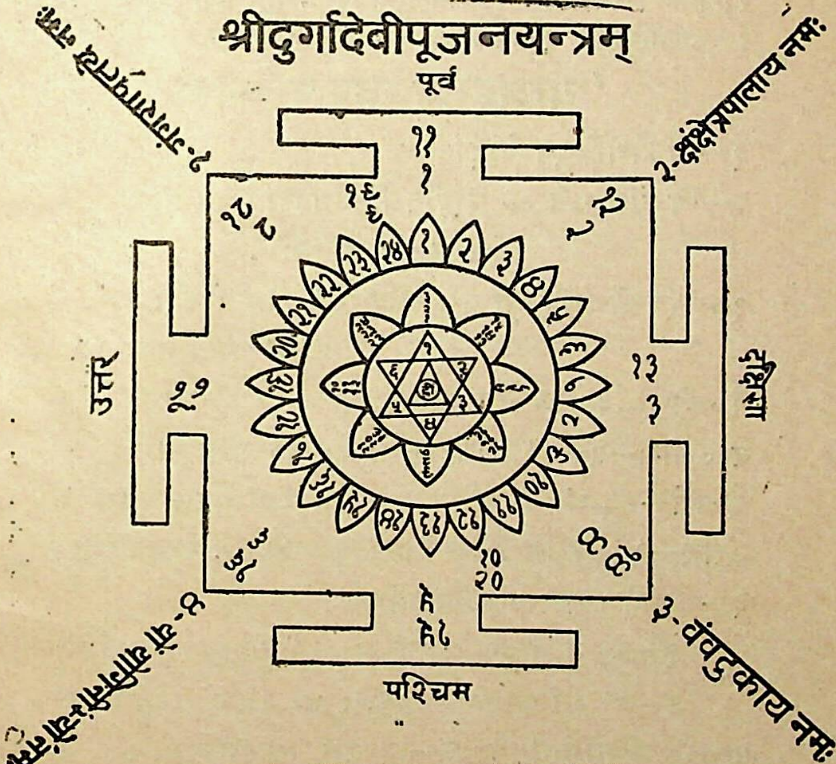

।। यन्त्रविवरणम् ।।

त्रिकोणे–३ । त्रिकोणाद्वाह्ये–१० । षट्कोणेषु–६ । अष्टपत्रेषु–३४ । चतुर्विंशतिदलेषु–२४ । तद्यथा—विष्णुमाया । २–चेतना । ३- वृद्धिः । ४–निद्रा । ५–क्षुधा । ६–छाया । ७–शक्तिः । ८–तृष्णा । ९–क्षान्तिः । १०–जातिः । ११–लज्जा । १२–शातिः । १३–श्रद्धा । १४–कान्तिः । १५–लक्ष्मी । १६–धृतिः । १७–वृत्तिः । १८–स्मृतिः । १९-दया । २०-तुष्टिः । २१-पुष्टिः । २२-मातृ । २३-भ्रान्तिः । २४-चितिः । चतुर्विंशतिदलेभ्योवाह्ये १ ,—ततोदिक्पालायुधवाहनादि । २० । ततोभूपुवाह्ये ४ ।

"यन्त्रस्थदेवता परिचयः"

१—त्रिकोणेबिंदुमध्येह्लीं

२—त्रिकोणमध्ये ॐ ऐंह्रींक्लींचामुण्डायै विच्चे ।

ॐ मं मङ्गलायैनमः ।

१०—त्रिकोणाद्वाह्ये पू० कोणे—ॐ ब्रह्मणेनमः

ॐ सरस्वत्यैनमः ।

नै०कोणे—३—ॐ विष्णवेनमः ४—ॐ श्रियैनमः ।

वा०कोणे—५—ॐ शिवायनमः ६—ॐ उमायैनमः ।

दक्षिणे—७—ॐ मं महिषायनमः ८—कां कालायनमः ।

उत्तरे—९—ॐ सिं सिंहायनमः १०—ॐ मृं मृत्यवेनमः ।

३—षट्कोणमध्ये पूर्वादिक्रमेण—

१—ॐ नं नन्दजायैनमः २—ॐ रं रक्तदन्तिकायैनमः ।

३—ॐ शां शाकम्भर्य्यैनमः ४—ॐ दुं दुर्गायैनमः ।

५—ॐ भींभींमायैनमः ६—ॐ भ्रां भ्रामर्य्यैनमः ।

केचिन्मतेऽत्रैवमहिषादीनांस्थापनादि

दक्षिणे–ॐ मं महिषायनमः ॐ कां कालायनमः।

बत्तरे–सिंसिहायनमः ॐ मृं मृत्यवेनमः।

२४–अष्टपत्रेषु पूर्वादिक्रमेध–

पूर्वे– ॐ जं जयायैनमः । ॐ वां ब्राह्मयैनमः। ॐ अं असिताङ्गभैरवायनमः

दक्षिणे–ॐ अं अजितायैनमः। ॐ मां माहेश्वर्य्यैनमः ॐ चं चण्डभैरवायनमः।

पश्चिमे- ॐ निं नित्यायैनमः। ॐ कौं कौमार्य्यैं नम.। ॐ उं उन्मत्तभैरवायनमः।

उत्तारे– ॐ विं विजयायैनमः। ॐ वैं वैष्णव्यैनमः। ॐ रुं रुरुभैरवायनमः।

अ॰ कोणे-ॐ द्रों द्रोध्यैनमः। ॐ वां वाराह्यैनमः। ॐ भों भीषणभैरवायनमः।

नै॰ कोणे-ॐ अं अघोरायैनः। ॐ नां नारसिंह्यैनमः। ॐ सं संहारभैरवायनमः।

वा॰ कोणे-ॐ विं विलासिन्यैनमः। ॐ अं अपराजितायैनमः। ॐ कं कपालभैरवायनमः।

ई॰कोणे-ॐ अं अपराजितायैनमः। ॐ चां चामुण्डायैनमः: ॐ क्रों क्रोधभैरवायनमः।

२४–ततश्चतुर्विशतिदलेषु पूर्वादिक्रमेण–

ॐ विं विष्णुमायायैनमः ।।१।। ॐ चें चेतनायैनमः । २।। ॐ वुं वुद्ध्यैनमः ।।३।। ॐ निं निद्रायैनमः ।।४।। ॐ क्षुं क्षुधायैनमः ।।५।। ॐ छां छायायैनमः ।।६।। ॐ शं शक्त्यैनमः ।।७।। ॐ तृं तृष्णायैनमः ।।८।। ॐ क्षां क्षान्त्यैनमः ।।९।। ॐ जां जात्यैनमः ।।१०।। ॐ लं लज्जायैनमः ।।११।। ॐ शां शान्त्यैनमः ।।१२।। ॐ श्रं श्रद्धायैनमः ।।१३।। ॐ कां कान्त्यैनमः । १४।। ॐ लं लक्ष्म्यैनमः ।।१५।। ॐ धृं धृत्यैनमः ।। १६।। ॐ स्मृं स्मृत्यैनमः ।।१७।। ॐ वृं वृत्यैनमः ।।१८।। ॐ तुं तुष्ट्यैनमः । १९।। ॐ पुं पुष्टयैनमः ।।२०।। ॐ दं दयायैनमः ।।२१।। ॐ मां मात्रेनमः ।।२२।। ॐ भ्रां भ्रान्त्यैनमः ।।२३।। ॐ चिं चित्यैनमः ।।२४।।

१०–ततश्चतुर्विशतिदलेभ्योवाह्ये–

लं इन्द्रायनमः ।।१।। रं अग्नयेनमः ।।२।। मं यमायनमः ।।३।। क्षं निर्ऋतयेनमः ।।४।। वं वरुणायनमः ।।५।। यंवायवेनमः ।।६।। संसोमायनमः ।।७ । ईं ईशानायनमः ।।८।। ईशान पूर्वयोर्मध्ये-अं ब्राह्मणेनमः ।।९।। पश्चिमनिर्ऋतयोर्मध्ये ह्रीं-अनन्तायनमः ।।१०।।

१०–ततोदिक्पालायुधवाहनादि-यथा–

ॐ वं वज्रायनमः ।।१।। ॐ शंशक्तयेनमः ।।२।। ॐ दं

दण्डायनमः ।३।। ॐ खं खङ्गायनमः ।।४।। ॐ पाँ पाशाय नमः ।।५।। ॐ अं अंकुशामनमः ।।६।। ॐ गंगदायैनमः ।।७।। ॐ त्रिशूलायनमः ।।८।। ॐ पं पद्मायनमः ।।९।। ॐ चं चक्रायनमः ।।१०।।

४—ततोभूपुरवाह्ये चतुष्कोणेषु--ऐशान्याम्—,
गं गणपतयेनमः ।।१।। आग्नेय्याम्-क्षं क्षेत्रपालायनमः ।।२।। नैर्ऋत्याम्-वं वटुकायनमः ।।३।। वायव्ये-यों योगिनीभ्यो नमः ।।४।।

।। इतिपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वान्देवानावाह्यपूजयेत् ।।

यन्त्रपूजन सङ्केत

यन्त्र में लिखे अङ्कानुसार देवताओं का आवाहनादि पूजनविधान विधिवत् करके यन्त्र पर घट स्थापन आदि कार्यक्रम करे। पश्चात् श्री दुर्गादेवी की मूर्ति स्वर्ण आदि किसी भी धातु की हो उसमें प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त सभी संस्कार करके षोडशोपचार पूजन करे। अथवा चित्ररख करके पूजनादि करके श्री तन्त्रमयी अर्थात् बीजमयी श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती का पाठ करे ।।पाठारम्भ से पूर्व तन्त्ररूप-रात्रि सूक्त का पाठ-पश्चात् नवार्णमन्त्रजप न्यासदि सहित तथा तंत्र सप्तशती का भी न्यासवध्यान आवश्यक है।

।। तन्त्ररूपं रात्रिसूक्तम् ।।७।।

ॐऐं ब्लूं नमः ।।१।। ॐऐं ठांनमः ।।२।। ॐऐं ह्रीं नमः ।।३।। ॐऐं स्रांनमः ।।४।। ॐऐं स्लूं नमः ।।५।। ॐऐं क्रैंनमः ।।६।। ॐऐं त्रां नमः ।।७।। ॐऐं फ्रां नमः ।।८।। ॐऐं जींनमः ।।९।। ॐऐं लूंनमः ।।१०।। ॐऐं स्लूं नमः ।।११।। ॐऐं नों नमः

॥१२॥ ॐऐं स्त्रीं नमः ॥१३॥ ॐऐं प्रूं नमः ॥१४॥ ॐऐं स्रूं नमः ॥१५॥ ॐऐ जां नमः ॥१६॥ ॐए वौं नमः ॥१७॥ ॐए ओं नमः ॥१८॥

॥ अथ नवार्ण जप विधिः ॥

इस प्रकार तन्त्र रूप में परिणत रात्रिसूक्ति का पाठ करने के पश्चात् निम्नाङ्कित रूप से नवार्णमन्त्र के विनियोग न्यास और ध्यान करे ॥

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवता, ऐं वीजम्. ह्रींशक्तिः, क्लींकीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थेजपे विनियोग. । पूर्वोक्त पढ़कर जल गिरावे ।

निम्नलिखिखित न्यास वाक्यों से एक एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अगुलियों से क्रमशः शिर-मुख-हृदय गुदा-दोनों चरण और नाभि इस अङ्गों का स्पर्श करे ।

॥ ऋष्यादिन्यासः ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकाली महालक्ष्मी महासतरस्वती देवताभ्योनमः, हृदि । ऐं बीजायनमः गुह्ये। ह्रींशक्तयेनमः, पादयोः । क्लींकीलकाय नमः, नाभौ । ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे, इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें ।

॥ करन्यासः ॥

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापित) किया जाता है। इसी प्रकार अङ्गन्यास में हृदयादि अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना होती है मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान् मानकर उन उन अङ्गों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता हैं। उसके बाहर भीतर की शुद्धि होती है। दिव्यबल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यांनमः (अँगूठों से माध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यांनमः (अनामिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ बिच्चे कनिष्ठिकाभ्यांनमः (कनिष्ठका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)

॥ हृदयादिन्यासः ॥

इसमें दाहिने हाथ की पाँचो अँगुलियों से हृदय आदि अङ्गों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयायनमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों
से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसेस्वाहा (सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायैवषट् (शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचायहुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों
से बांये कंधे का और बाँयें हाथ की अँगुलियों से दाहिने
कंधे का साथ ही स्पर्श)

ॐ विच्चे नेत्रत्रयायवौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों
के अग्र भाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग
का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे अस्त्रायफट् (यह
वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बाँयी ओर
से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर
ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ
की हथेली पर ताल बजावें।

॥ अक्षरन्यासः ॥

निम्नांङ्कित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की
अँगुलियों से स्पर्श करे।

ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ
क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः कर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे
ॐ डाँ नमः दक्षिणनासापुटे ॐ यैं नमः वामनासापुटे विं
नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इस मन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा) सिर से लेकर पैर तक के सब अङ्गों का स्पर्श करें। बाद में प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुये न्यास करें।

।। दिङ्न्यासः ।।

ॐ ऐं प्राच्यैनभः । ॐ ऐं आग्नेय्यैनमः ॐ ह्रीं दक्षिणायैनमः ॐ ह्रीं नैऋृंर्त्यैनमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यैनमः । ॐ क्लीं वायव्यैनमः । ॐ चामण्डायै उदीच्यैनमः। ॐ चामुण्डायै ऐं शान्यैनमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायैनमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चेभूम्यैनमः ।

।। ध्यानम् ।।

खङ्गञ्चक्रगदेषु चापपरिखाञ्छूलम्भुशुण्डीं शिरः
शङ्खंसंदधतीङ्करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषवृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवेमहाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौकमलजो हन्तुम्मधुङ्कैटभम् ।।१।।

अक्षस्त्रक्परशुङ्गदेषुकुलिशं पद्मन्धनुःकुण्डिकां
दन्डंशक्तिमसिञ्चचर्मजलजंघण्टांसुराभाजनम् ।
शूलंपाशसुदर्शनेचदधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्तिाम् ।।२।।

घण्टाशूलहलानिशङ्खमुसले चक्रंधनुःसायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीङ घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।

गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूताम्महा.
पूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम ।।३।।

पश्चात्–ऐं ह्रीं अक्षमालिकायैनमः, इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें।

ॐ मां मालेमहामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ।।१।।
ॐ अविघ्नंकुरुमाले त्वंगृह्णामिदक्षिणेःकरे ।
जपकालेचसिद्ध्यर्थं प्रसीदममसिद्धये ।।२।।

इसके पश्चात्– "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मन्त्र का १०८ बार जप करे ।

पश्चात्–

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वंगृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतुमे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।।

इस श्लोक को पढ़कर देवी के वाम हस्त में जपनिवेदन करें।

।। इतिनवार्णजपविधिः ।।

नवार्ण विधि में अनुसार जप करने के बाद सप्तशती के विनियोग न्यास और ध्यान करने चाहिये। पूर्वाङ्कित क्रमानुसार न्यासादि करें।

अथश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीविनियोग-न्यास-ध्यानादि ।

प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्त्योदेवताः, गायत्र्युष्णि-गनुष्टुभश्छन्दासिनन्दाशाकम्भरीभीभाः शक्तयः, रक्तदन्ति-

का दुर्गांक्रमर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्ततत्वानि, ऋग्यजु: सामवेदाध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थेजपे विनियोग:

खड्गनीशूलिनीघोरागदिनी चक्रिणीतथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥
ॐ ऐं स्लूं नम: अङ्गुष्टाभ्यान्नम: ।
ॐ शूलेनपाहि नो देविपाहिखड्गेनचाम्बिके ।
घण्टा स्वनेनन: पाहिचापज्यानिस्वनेनच ॥
ॐ ऐ फ्रेंनम: । (तर्जनीभ्यान्नम:
प्रच्यांरक्षप्रतीच्याञ्च चण्डिकेरक्षदक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥
ॐ ऐ क्रीं नम: । मध्यमाभ्यान्नम: ।
ॐसौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्येविचरन्तिते ।
यानि चात्यर्थघोराणितै रक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥
ॐ ऐं म्लूंनम: । अनामिकाभ्यान्नम: ।
ॐखड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणितेऽम्बिके ।
करपल्लबसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वत: ।
ॐ ऐं घैं नम: । कनिष्टिकाभ्यान्नम: ।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नोदेवि दुर्गे देविनमोस्तुते ॥
ॐ ऐं श्रँूनम: । करतलकरपृष्ठाभ्यान्नम:

ॐ ऐंस्लूं नमः खड्गिनी शूलिनी घोरा०-हृदयायनमः ।
ॐ ऐं फ्रैंनमः ।-शूलेनपाहिनोदेबि०-शिरसेस्वाहा ।
ॐ ऐं क्रीं नमः प्राच्यांरक्षप्रतोच्यांच शिखायैवषट् ।
ॐ ऐंम्लूं नमः । सोम्यानियामिरूपाणि०-कवचायहुम् ।
ॐऐं ग्रेंनमः । खड्गशूलगदादो नि०-नेत्रत्रयाक्वौषट्
ॐ ऐं श्रूं नमः । सर्वस्वरूपेसर्वेशे०-अस्त्रायफट्

॥ ध्यानम् ॥

विद्युद्दामसमप्रभाम्मृगपतिस्कन्धस्थिताम्भीषणां
कन्याभिःकरवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापंगुणंतर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरान्दुर्गान्त्रिनेत्रांम्भजे ॥

अर्थ—जिसके अंगों की शोभा विजली के समान हैं, सिंह की सवारी पर बैठीं हुई भयङ्कर प्रतीत होती है, हाथों में चक्र-गदा-तलवार-ढाल-वाण-धनुष -पाश-तर्जनीमुद्रा लिये है अनेक कन्यायें जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अग्निमय हैं, जो अपने माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण किये हैं उन तीन नेत्रवाली दुर्गा का मैं भजन करता हूँ । इसप्रकार भगवती दुर्गा देवी का ध्यान करके श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ करें

इतिश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती-विनियोग-न्यास ध्यानादि ॥

सङ्केत–क्रमानुसार येवीजमंत्र जपने से सकल कामनाप्रद निश्चित हैं । एवमेव-सर्वत्र अति प्रचलित दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुटित करने से भी शीघ्र सिद्ध होनी है ।

॥ अर्थश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीपाठारम्भः ॥

॥ श्री .णेशायनमः ॥

॥ अथ प्रथमोध्यायः ॥

ओंप्रथमचरित्रस्य ब्रह्माऋषिः महाकालीदेवतागायत्री-अग्नि
छन्दः, नन्दाशक्तिः, रक्तदन्तिकावीजम्अग्निस्तत्वं, ऋग्वेदः-स्वरूपं-श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपेपाठेविनियोगः।

ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे।१०८। ओ बीजत्रयायै-विद्महे तत्प्रधानायैधीमहि। तन्नः शक्तिः प्राचोदयात्।

ॐ ए श्रीं नमः १। ॐ ऐं ह्रीं नमः २। ॐ ऐं क्लीं नमः ३। ॐ ऐं श्रों नमः ४। ॐ ऐं प्रीं नमः ५। ॐ ऐं ह्लां नमः ६। ॐ ऐं ह्लीं नमः ७। ॐ ऐं स्रौं नमः ८। ॐ ऐं प्रें नमः ९। ॐ ऐं म्रीं नमः १०। ऐं ह्लीं नमः ११। ॐ ऐं म्लीं नमः १२। ॐ ऐं स्त्रीं नमः १३। ॐऐं क्रां नमः १४। ॐ ऐं ह् स्लीं नमः १५। ॐ ऐं क्रीं नमः १६। ॐ ऐं चां नमः १७। ॐ ऐं भें नमः १८। ॐ ऐं क्रीं नमः १९। ॐ ऐं वैं नमः २०। ॐ ऐं ह्रौं नमः २१। ॐ ऐं युं नमः २२। ॐ ऐं जुं नमः २३। ॐ ऐं हं नमः २४। ॐ ऐं शं नमः २५। ॐ ऐं रौं नमः २६। ॐ ऐं यं नमः २७। ॐ ऐं विं नमः २८। ॐ ऐं वैं नमः २९। ॐ ऐं चें नमः ३०। ॐ ऐं ह्लीं

नमः ३१ । ॐ ऐं क्रूं नमः ३२ । ॐ ऐं सं नमः । ३३ ॐ ऐं कं नमः ३४ । ॐ ऐं श्रीं नमः ३४ । ॐ ऐं त्रों नमः ३६ । ॐ ऐं स्त्रां नमः ३७ । ॐ ऐं ज्यं नमः ३८ । ॐ ऐं रौं नमः ३९ । ॐ ऐं द्रां नमः । ॐ ऐं ह्लां नमः ४१ । ॐ ऐं ह्लां नमः ४२ । ॐ ऐं द्रूं नमः ४३ । ॐ ए शां नमः ४४ । ॐ ऐं क्रीं नमः ४५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ४६ । ॐ ऐं जुं नमः ४७ । ॐ ऐं हल्रूं नमः ४८ । ॐ ऐं श्रूं नमः ४९ । ॐ ऐं प्रीं नमः ५० । ॐ ऐं रं नमः ५१ । ॐ ऐं वं नमः ५२ । ॐ ऐं ब्रों नमः ५३ । ॐ ऐं ब्लं नमः ५४ । ॐ ऐं स्त्रां नमः ५५ । ॐ ऐं ल्वां नमः ५६ । ॐ ऐं लूं नमः ५७ । ॐ ऐं सां नमः ५८ । ॐ ऐं रौं नमः ५९ । ॐ ऐं स्ह्रौं नमः ६० । ॐ ऐं क्रूं नमः ६१ । ॐ ऐं शौं नमः ६२ । ॐ ऐं श्रौं नमः ६३ । ॐ ऐं वं नमः ६४ । ॐ ऐं त्रूं नमः ६५ । ॐ ऐं क्रौं नमः ६६ । ॐ ऐं क्लूं नमः ६७ । ॐ ऐं क्लीं नमः ६८ । ॐ ऐं श्रीं नमः ६९ । ॐ ऐं ब्लूं नमः ७० । ॐ ऐं ठां नमः ७१ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ७२ । ॐ ऐं स्त्रां नमः ७३ । ॐ ऐं स्लूं नमः ७४ । ॐ ऐं क्रैं नमः ७५ । ॐ ऐं त्रां नमः ७६ । ॐ ऐं फ्रां नमः ७७ । ॐ ऐं जीं नमः ७८ । ॐ ऐं लूं नमः ७९ । ॐ ऐं स्लूं नमः ८० । ॐ ऐं नों नमः ८१ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ८२ । ॐ ऐं प्रूं नमः ८३ । ॐ ऐं सूं नमः ८४ ।

ॐ ए ज्रां नमः ८५। ॐ ऐं बौं नमः ८६। ॐ ऐं ओं नमः ८७। ॐ ऐं श्रौं नमः ८८। ॐ ऐं ॠं नमः ८९। ॐ ऐं रूं नमः ९०। ॐ ऐं क्लीं नमः ९१। ॐ ऐं दुं नमः ९२। ॐ ऐं ह्रीं नमः ९३। ॐ ऐं गूं नमः ९४। ॐ ऐं लां नमः ९५। ॐ ऐं ह्रां नमः ९६। ॐ ऐं गं नमः ९७। ॐ ऐं ऐं नमः ९८। ॐ ऐं श्रौं नमः ९९। ॐ ऐं जूं नमः १००। ॐ ऐ डें नमः १०१। ॐ ऐं श्रौं नमः १०२। ॐ ऐं छां नमः १०३। ॐ ऐं क्लीं नमः १०४।

॥ इति प्रथमोध्यायः ॥

—०—०—

॥ अथ द्वितीयोध्यायः ॥

ओं मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक्छन्दः शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गाबीजं, वायुस्तत्वं, यजुर्वेदः स्वरूपं, श्री महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्र जपे (पाठे) विनियोगः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं श्रीं नमः २। ॐ ऐंह् सूं नमः ३। ॐ एं ह्रौं नमः ४। ॐ ऐं ह्रीं नमः ५। ॐ ऐं अं नमः ६। ॐ ऐं क्लीं नमः ७। ॐ ऐं चां नमः ८। ॐ ऐं मुं नमः ९। ॐ ऐं डां नमः १०। ॐ ऐं यैं नमः ११। ॐ ऐं विं नमः १२। ॐ ऐं च्चें नमः १३। ॐ ऐं ईं

नमः १४ । ॐ ऐं सौं नमः १५ । ॐ ऐं गं नमः १६ । ॐ ऐं त्रौं नमः १७ । ॐ ऐं लूं नमः १८ । ॐ ऐं वं नमः १९ । ॐ ऐं ह्रां नमः २० । ॐ ऐं क्रीं नमः २१ । ॐ ऐं सौं नमः २२ । ॐ ऐं यं नमः २३ । ॐ ऐं ऐं नमः २४ । ॐ ऐं मूं नमः २५ । ॐ ऐं सं नमः २६ । ॐ ऐं हं नमः २७ । ॐ ऐं सं नमः २८ । ॐ ऐं सों नमः २९ । ॐ ऐं शं नमः ३० । ॐ ऐं हं नमः ३१ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ३२ । ॐ ऐं म्लीं नमः ३३ । ॐ ऐं यूं नमः ३४ । ॐ ऐं त्रूं नमः । ॐ ऐं स्त्रौं नमः ३६ । ॐ ऐं आं नमः ३७ । ॐ ऐं प्रें नमः ३८ । ॐ ऐं शं नमः ३९ । ॐ ऐं ह्रां नमः ४० । ॐ ऐं स्मूं नमः ४१ । ॐ ऐं ऊं नमः ४२ । ॐ ऐं गूं नमः । ४३ । ॐ ऐं व्र्यं नमः ४४ । ॐ ऐं ह्रं नमः ४५ । ॐ ऐं भैं नमः ४६ । ॐ ऐं ह्रां नमः ४७ । ॐ ऐं क्रूं नमः ४८ । ॐ ऐं मूं नमः ४९ । ॐ ऐंलरीं नमः ५० । ॐ ऐं श्रां नमः ५१ । ॐ ऐं द्रूं नमः ५२ । ॐ ऐं ह्रूं नमः ५३ । ॐ ऐं ह्सौं नमः ५४ । ॐ ऐं क्रां नमः ५५ । ॐ ऐं स्हौं नमः ५६ । ॐ ऐं म्लूं नमः ५७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ५८ । ॐ ऐं गैं नमः ५९ । ॐ ऐं क्रीं नमः ६० । ॐ ऐं त्रीं नमः ६१ । ॐ ऐं क्सीं नमः ६२ । ॐ ऐं फ्रों नमः ६३ । ॐ ऐं फ्रों नमः ६४ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ६५ । ॐ ऐं शां नमः ६६ । ॐ ऐं क्ष्म्रींनमः ६७ । ॐ ऐं रों

नमः ६८ । ॐ ऐं डूं नमः ६९ ।

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ तृतीयोध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रीं नमः १ । ॐ ऐं क्लीं नमः २ । ॐ ऐं सां नमः ३ । ॐ ऐं चों नमः ४ । ॐ ऐं प्रूं नमः ५ । ॐ ऐं म्लीं नमः ६ । ॐ ऐं क्रौं नमः ७ । ॐ ऐं व्रीं नमः ८ । ॐ ऐं स्लीं नमः ९ । ॐ ऐं ह्लीं नमः १० । ॐ ऐं ह्रौं नमः ११ । ॐ ऐं श्रां नमः १२ । ॐ ऐं ग्रों नमः १३ । ॐ ऐं क्रूं नमः १४ । ॐ ऐं क्रीं नमः १५ । ॐ ऐं यां नमः १६ । ॐ ऐं द्रूं नमः १७ । ॐ ऐं द्रूं नमः १८ । ॐ ऐं क्षं नमः १९ । ॐ ऐं ओं नमः २० । ॐ ऐं क्रौं नमः २१ । ॐ ऐं क्ष्म्क्ल्रीं नमः २२ । ॐ ऐं वां नमः २३ । ॐ ऐं श्रूं नमः २४ । ॐ ऐं ब्लूं नमः २५ । ॐ ऐं ल्रीं नमः २६ । ॐ ऐं प्रें नमः २७ । ॐ ऐं हूं नमः २८ । ॐ ऐं ह्रौं नमः २९ । ॐ ऐं दें नमः ३० । ॐ ऐं नूं नमः ३१ । ॐ ऐं आं नमः ३२ । ॐ ऐं फ्रां नमः ३३ । ॐ ऐं प्रीं नमः ३४ । ॐ ऐं दूं नमः ३५ । ॐ ऐं फ्रीं नमः ३६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ३७ । ॐ ऐं गूं नमः ३८ । ॐ ऐं श्रौं नमः ३९ । ॐ ऐं सां नमः ४० । ॐ ऐं श्रीं नमः ४१ । ऐं ॐ

नमः ४२ । ॐ ऐं हं नमः ४३ । ॐ ऐं सं नमः ४४ ।

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं सौं नमः २ । ॐ ऐं द्रीं नमः ३ । ॐ ऐं प्रें नमः ४ ॐ ऐं यां नमः ५ । ॐ ऐं रूं नमः ६ । ॐ ऐं भं नम ७ । ॐ ऐं सूं नमः ८ । ॐ ऐं श्रां नमः ९ । ॐ ऐं औं नमः १०। ॐ ऐ लूं नमः ११। ॐ ए डूं नमः १२। ॐ ऐं जूं नमः १३ । ॐ ऐं धूं नमः १४ । ॐ ऐं त्रें नमः १५ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १६ । ॐ ऐं श्रीं नमः १७ । ॐ ऐं ईं नमः १८ । ॐ ऐं ह्रां नमः १९ । ॐ ऐं ह्लरूं नमः २० । ॐ ऐं क्लूं नमः २१ । ॐ ऐं क्रां नमः २२ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २३ । ॐ ऐं फ्रें नमः २४ । ॐ ऐं क्रीं नमः २५ । ॐ ऐं म्लूं नमः २६ । ॐ ऐं घ्रें नमः २७ । ॐ ऐं श्रौं नमः २८ । ॐ ऐं ह्रौं नमः २९ । ॐ ऐं व्रीं नमः ३० । ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१ । ॐ ऐं त्रौं नमः ३२ । ॐ ऐं ह्ल्लौं नमः ३३ । ॐ ऐं गीं नमः ३४ । ॐ ऐं यूं नमः ३५ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ३६ । ॐ ऐं ह्लूं नमः ३७ । ॐ ऐं श्रौं नमः ३८ । ॐ ऐं ओ नमः ३९ । ॐ ऐं अं नमः ४० । ॐ ऐं म्ह्रौं नमः ४१ । ॐ ऐं प्रीं नमः ४२ ।

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

ओं अस्य उत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषिः महासरस्वतीदेवता, अनुष्टुप्छन्दः, भीमाशक्तिः, भ्रामरीवीजम्, सूर्यस्तत्वं, सामवेदः स्वरूपं, श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थेपाठे(जपे) विनियोगः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं प्रीं नमः २ ॐ ऐं ओं नमः ३। ॐ ऐं ह्रीं नमः ४। ॐ ऐं ल्री नमः ५। ॐ ऐं त्रों नमः ६। ॐ ऐं क्रीं नमः ७। ॐ ऐं ह्सौं नमः ८। ॐ ऐं ह्रीं नमः ९। ॐ ऐं श्रीं नमः १०। ॐ ऐं हूं नमः ११। ॐ ऐं क्लीं नमः १२। ॐ ऐं रौं नमः १३। ॐ ऐं स्त्रीं नमः १४। ॐ ऐं म्लीं नमः १५। ॐ ऐं प्लूं नमः १६। ॐ ऐं स्हा नमः १७। ॐ ऐं स्त्रीं नमः १८। ॐ ऐं ग्लूं नमः १९। ॐ ऐं व्रीं नमः २०। ॐ ऐं सौं नमः २१। ॐ ऐं लूं नमः २२। ॐ ऐं ल्लूं नमः २३। ॐ ए द्रां नमः २४। ॐ ऐं क्सां नमः २५। ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः २६। ॐ ऐं ग्लौं नमः २७। ॐ ऐं स्कूं नमः २८। ॐ ऐं त्रूं नमः २९। ॐ ऐं स्क्लूं नमः ३०। ॐ ऐं क्रौं नमः ३१। ॐ ऐं छ्रीं नमः ३२। ॐ ऐं म्लूं नमः ३३। ॐ ऐं क्लूं नमः ३४। ॐ ऐं शां नमः ३५। ॐ ऐं ल्हीं नमः ३६। ॐ ऐं स्त्रूं नमः ३७। ॐ ऐं ल्लीं नमः ३८। ॐ ऐं लीं नमः ३९। ॐ ऐं सं नमः ४०। ॐ ऐं लूं नमः ४१। ॐ ऐं ह्सूं नमः ४२। ॐ ऐं श्रूं नमः ४३।

ॐ ऐं जूं नमः ४४। ॐ ऐं ह्स्ल्रीं नमः ४५। ॐ ऐं स्कीं नमः ४६। ॐ ऐं क्लां नमः ४७। ॐ ऐं श्रूं नमः ४८। ॐ ऐं हं नमः ४९। ॐ ऐं ह्लीं नमः ५०। ॐ ऐं क्स्रू नमः ५१। ॐ ऐं द्रौं नमः ५२। ॐ ऐं क्लूं नमः ४३। ॐ ऐं गां नमः ४५। ॐ ऐं सं नमः ५५। ॐ ऐं ल्स्रां नमः ५६। ॐ ऐं फ्रीं नमः ५७। ॐ ऐं स्लां नमः ५८। ॐ ऐं ल्लूं नमः ५९। ॐ ऐं फ्रें नमः ६०। ॐ ऐं ओं नमः ६१। ॐ ऐं स्मलीं नमः ६२। ॐ ऐं ह्रां नमः ६३। ॐ ऐं ॐ नमः ६४। ॐ ऐं ह्लूं नमः ६५। ॐ ऐं हूँ नमः ६६। ॐ ऐं नं नमः ६७। ॐ ऐं स्रां नमः ६८। ॐ ऐं वं नमः ६९। ॐ ऐं मं नमः ७०। ॐ ऐं म्क्लीं नमः ७१। ॐ ऐं शां नमः ७२। ॐ ऐं लं नमः ७३। ॐ ऐं भैं नमः ७४। ॐ ऐं ल्लूं नमः ७५। ॐ ऐं हौं नमः ७६। ॐ ऐं ईं नमः ७७। ॐ ऐं चें नमः ७८। ॐ ऐं ल्क्रीं नमः ७९। ॐऐंह्ल्रीं नमः ८०। ॐ ऐं क्ष्म्ल्रीं नमः ८१। ॐ ऐं यूं नमः ८२। ॐ ऐं श्रौं नमः ८३। ॐ ऐं ह्रौं नमः ८४। ॐ ऐं भ्रूं नमः ८५। ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ८६। ॐ ऐं आं नमः ८७। ॐ ऐं क्रूं नमः ८८। ॐ ऐं त्रूं नमः ८९। ॐ ऐं डूं नमः ९०। ॐ ऐं जां नमः ९१। ॐ ऐं ह्ल्रूं नमः ९२। ॐ ऐं फ्रौं नमः ९३। ॐ ऐं क्रौं नमः ९४। ॐ ऐं किं नमः ९५। ॐ ऐं ग्लूं नमः ९६। ॐ ऐं छ्रू क्लीं नमः ९७।

ॐ ऐं रं नमः ९८ । ॐ ऐं क्सैं नमः ९९ । ॐ ऐं स्हुं नमः १०० । ॐ ऐं श्रौं नमः १०१ । ॐ ऐं ह् श्रीं नमः १०२ । ॐ ऐं ओं नमः १०३ । ॐ ऐं लूं नमः १०४ । ॐ ऐं ल्हूं नमः १०५ । ॐ ऐं ल्लूं नमः १०६ । ॐ ऐं स्क्रीं नमः १०७ । ॐ ऐं स्स्रौं नमः १०८ । ॐ ऐं स्भ्रूं नमः १०९ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः ११० । ॐ ऐं व्रीं नमः १११ । ॐ ऐं सीं नमः ११२ । ॐ ऐं भ्रूं नमः ११३ । ॐ ऐं लां नमः ११४ । ॐ ऐं श्रौं नमः ११५ । ॐ ऐं स्हैं नमः ११६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ११७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ११८ । ॐ ऐं फ्रें नमः ११९ । ॐ ऐं रूं नमः १२० । ॐ ऐं च्छूं नमः १२१ । ॐ ऐं ल्हूं नमः १२२ । ॐ ऐं कं नमः ११३ । ॐ ऐं द्रें नमः १२४ । ॐ ऐं श्रीं नमः १२५ । ॐ ऐं सां नमः १२६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १२७ । ॐ ऐं ऐं नमः १२८ । ॐ ऐं स्क्लीं नमः १२९ ।

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं ओं नमः २ । ॐ ऐं त्रूं नमः ३ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ४ । ॐ ऐं क्रौं नमः ५ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ६ । ॐ ऐं त्रौं नमः ७ । ॐ ऐं क्लीं नमः ८ । ॐ ऐं प्रीं नमः ९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १० । ॐ ऐं ह्रौं

नमः ११ । ॐ ऐं श्रौं नमः १२ । ॐ ऐं ऐं नमः १३ । ॐ ऐं ओं नमः १४ । ॐ ऐं श्रीं नमः १५ । ॐ ऐं क्रां नमः १६ । ॐ ऐं हूं नमः १७। ॐ ऐं छ्रां क्लीं नमः १८ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लरीं नमः १९ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २० । ॐ ऐं सौं नमः २१ । ॐ ऐं ह्लौं नमः २२ । ॐ ऐं क्रूं नमः २३ । ॐ ऐं सौं नमः २४

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं कूं नमः २ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ३ । ॐ ऐं ह्लं नमः ४ । ॐ ऐं मूं नमः ५ । ॐ ऐं त्रौं नमः ६ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ७ । ॐ ऐं ओं नमः ८ । ॐ ऐं ह्सूं नमः ९ । ॐ ऐं क्लूं नमः १० ॐ ऐं कैं नमः ११ । ॐ ऐं नें नमः १२ । ॐ ऐं लूं नमः १३ । ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १४ । ॐ ऐं प्लूं नमः १५ । ॐ ऐं शां नमः १६ । ॐ ऐं स्लूं नमः १७ । ॐ ऐं प्लीं नमः १८ । ॐ ऐं प्रैं नमः १९ । ॐ ऐं अं नमः २० । ॐ ऐं औं नमः २१ । ॐ ऐं म्लरीं नमः २२ । ॐ ऐं श्रां नमः २३ । ॐ ऐं सौं नमः २४ । ॐ ऐं श्रौं नमः २५ । ॐ ऐं प्रीं नमः २६ । ॐ ऐं ह्स्व्रीं नमः २७ ।

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं म्हल्रीं नमः २ । ॐ ऐं प्रूं नमः ३ । ॐ ऐं ऐं नमः ४ । ॐ ऐं क्रों नमः ५ । ॐ ऐं ईं नमः ६ । ॐ ऐं ऐं नमः ७ । ॐ ऐं ल्रीं नमः ८ । ॐ ऐं फ्रौं नमः ९ । ॐ ऐं म्लूं नमः १० । ॐ ऐं नों नमः ११ । ॐ ऐं हूं नमः १२ । ॐ ऐं फ्रीं नमः १३ । ॐ ऐं ग्लौं नमः १४ । ॐ ऐं स्मौं नमः १५ । ॐ ऐं सौं नमः १६ । ॐ ऐं श्रीं नमः १७ । ॐ ऐं स्हौं नमः १८ । ॐ ऐं ख्सें नमः १९ । ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः २० । ॐ ऐं ह्रां नमः २१ । ॐ ऐं वीं नमः २२ । ॐ ऐं लूं नमः २३ । ॐ ऐं ल्सीं नमः २४ । ॐ ऐं ब्लों नमः २५ । ॐ ऐं त्स्रों नमः २६ । ॐ ऐं ब्रूं नमः २७ । ॐ ऐं श्क्लीं नमः २८ । ॐ ऐं श्रूं नमः २९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ३० । ॐ ऐं शीं नमः ३१ । ॐ ऐं क्लीं नमः ३२ । ॐ ऐं क्लौं नमः ३३ । ॐ ऐं प्रूं नमः ३४ । ॐ ऐं ह्रूं नमः ३५ । ॐ ऐं क्लूं नमः ३६ । ॐ ऐं तौं नमः ३७ । ॐ ऐं म्लूं नमः ३८ । ॐ ऐं हं नमः ३९ । ॐ ऐं स्लूं नमः ४० । ॐ ऐं औं नमः ४१ । ॐ ऐं ल्हीं नमः ४२ । ॐ ऐं श्ल्रीं नमः ४३ । ॐ ऐं यां नमः ४४ । ॐ ऐं थ्लीं नमः ४५ । ॐ ऐं ल्हीं नमः ४६ । ॐ ऐं ग्लौं नमः ४७ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ४८ । ॐ ऐं प्रां नमः ४९ । ॐ ऐं क्रीं नमः ५० । ॐ ऐं क्लीं नमः ५१ ।

ॐ ऐं न्स्लूं नमः ५२ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ५३ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ५४ । ॐ ऐं ह्रैं नमः ५५ । ॐ ऐं भ्रं नमः ५६ । ॐ ऐं सौं नमः ५७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ५८ । ॐ ऐं सूं नमः ५९ । ॐ ऐं द्रौं नमः ६० । ॐ ऐं स्स्रां नमः ६१ । ॐ ऐं ह्स्लीं नमः ६२ । ॐ ऐं स्ल्रीं नमः ६३ ।

॥ इत्यष्टमोऽध्यायः ॥

—०◯०—

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं रौं नमः १ । ॐ ऐं क्लीं नमः २ । ॐ ऐं म्लौं नमः ३ । ॐ ऐं श्रौं नमः ४ । ॐ ऐं ग्लीं नमः ५ । ॐ ऐं ह्रौ नमः ६ । ॐ ऐं ह्सौं नमः ७ । ॐ ऐं ईं नमः ८ । ॐ ऐं ब्रूं नमः ९ । ॐ ऐं श्रां नमः १० । ॐ ऐं लूं नमः ११ । ॐ ऐं आं नमः १२ । ॐ ऐं श्रीं नमः १३ । ॐ ऐं क्रौं नमः १४ । ॐ ऐं प्रूं नमः १५ । ॐ ऐं क्लीं नमः १६ । ॐ ऐं भ्रं नमः १७ । ॐ ऐं ह्रौं नमः १८ । ॐ ऐं क्रीं नमः १९ । ॐ ऐं म्लीं नमः २० । ॐ ऐं ग्लौं नमः २१ । ॐ ऐं ह्सूं नमः २२ । ॐ ऐं ल्पीं नमः २३ । ॐ ऐं ह्रौं नमः २४ । ॐ ऐं ह् स्रांनम २५ । ॐ ऐं स्हौं नम २६ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २७ । ॐ ऐं क्स्लीं नमः २८ । ॐ ऐं श्रीं नमः २९ । ॐ ऐं स्तूं नमः ३० ।

ॐ ऐं चूं नमः ३१। ॐ ऐं वीं नमः ३२। ॐ ऐं क्ष्लूं नमः ३३। ॐ ऐं श्लूं नमः ३४। ॐ ऐं क्रूं नमः ३५। ॐ ऐं क्रां नमः ३६। ॐ ऐं ह्लौं नमः ३७। ॐ ऐं क्रां नमः ३८। ॐ ऐं स्क्ष्लीं नमः ३९। ॐ ऐं सूं नमः ४०। ॐ ऐं फ़ूं नमः ४१।

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं ह्लीं नमः २। ॐ ऐं ब्लूं नमः ३। ॐ ऐं ह्लीं नमः ४। ॐ ऐं म्लूं नमः ५। ॐ ऐं श्रौं नमः ६। ॐ ऐं ह्लीं नमः ७। ॐ ऐं ग्लीं नमः ८। ॐ ऐं श्रौं नमः ९। ॐ ऐं ध्रूं नमः १०। ॐ ऐं हुं नमः ११। ॐ ऐं द्रौं नमः १२। ॐ ऐं श्रीं नमः १३। ॐ ऐं त्रूं नमः १४। ॐ ऐं व्रूं नमः १५। ॐ ऐं फ्रें नमः १६। ॐ ऐं ह्लां नमः १७। ॐ ऐं जुं नमः १८। ॐ ऐं स्रौं नमः १९। ॐ ऐं स्लू नमः २०। ॐ ऐं प्रें नमः २१। ॐ ऐं ह्स्वां नमः २२। ॐ ऐं प्रीं नमः २३। ॐ ऐं फ्रां नमः २४। ॐ ऐं क्रीं नमः २५। ॐ ऐं श्रीं नमः २६। ॐ ऐं क्रां नमः २७। ॐ ऐं सः नमः २८। ॐ ऐं क्लीं नमः २९। ॐ ऐं व्रें नमः ३०। ॐ ऐं ईं

नमः ३१ । ॐ ऐं ज्स्ह्ल्रां नमः ३२ ।

॥ इति दसमाऽध्यायः ॥

॥ अथ एकादशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं क्रूं नमः २ । ॐ ऐं श्रों नमः ३ । ॐ ऐं ल्लीं नमः ४ । ॐ ऐं प्रं नमः ५ । ॐ ऐं सौं नमः ६ । ॐ ऐं स्हौं नमः ७ । ॐ ऐं श्रूं नमः ८ । ॐ ऐं क्लीं नमः ९ । ॐ ऐं स्क्लीं नमः १० । ॐ ऐं प्रीं नमः ११ । ॐ ऐं ग्लौं नमः १२ । ॐ ऐं नमः १३ । ॐ ऐं स्तौं नमः १४ । ॐ ऐं क्लीं नमः १५ । ॐ ऐं म्लीं नमः १६ । ॐ ऐं स्तूं नमः १७ । ॐ ऐं ज्स्ह्लीं नमः १८ । ॐ ऐं फ्रू नमः १९ । ॐ ऐं क्रूं वमः २० । ॐ ऐं ह्लीं नमः २१ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २२ । ॐ ऐं क्ष्रीं नमः २३ । ॐ ऐं श्रूं नमः २४ । ॐ ऐं इं नमः २५ । ॐ ऐं जुं नमः २६ । ॐ ऐं त्रैं नमः २७ । ॐ ऐं द्रूं नमः २८ । ॐ ऐं ह्लौं नमः २९ । ॐ ऐं क्लीं नमः ३० । ॐ ऐं सूं नमः ३१ । ॐ ऐं हौं नमः ३२ । ॐ ऐं म्त्रं नमः ३३ । ॐ ऐं व्रूं नमः ३४ । ॐ ऐं फां नमः ३५ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ३६ । ॐ ए लं नमः ३७ । ॐ ऐं ह्सौं नमः ३८ । ॐ ऐं सें नमः ३९ । ॐ ऐं ह्लों नमः ४० । ॐ ऐं ह्लौं नमः ४१ । ॐ ऐं विं नमः ४२ । ॐ ऐं प्लीं नमः ४३ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः

४४ । ॐ ऐं त्स्रां नमः ४५ । ॐ ऐं प्रं नमः ४६ । ॐ ऐं म्लीं नमः ४७ । ॐ ऐं स्रूं नमः ४८ । ॐ ऐं क्ष्मां नमः ४९ । ॐ ऐं स्तूं नमः ५० । ॐ ऐं स्ह्रीं नमः ५१ । ॐ ऐं थ्रीं नमः ५२ । ॐ ऐं क्रौं नमः ५३ । ॐ ऐं श्रां नमः ३९ । ॐ ऐं म्लीं नमः ५५ ।

॥ इत्येकादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः १ । ॐ ऐं ओं नमः २ । ॐ ऐं श्रीं नमः ३ । ॐ ऐं ई नमः ४ । ॐ ऐं क्लीं नमः ५ ॐ ऐं क्रूं नमः ६ । ॐ ऐं श्रूं नमः ७ । ॐ ऐं प्रां नमः ८ । ॐ ऐं क्रूं नमः ९ । ॐ ऐं दिं नमः १० ॐ ऐं फ्रं नमः । ११ । ॐ ऐं हं नमः १२ । ॐ ऐं सः नमः १३ । ॐ ऐं चें नमः १४ । ॐ ऐं सूं नमः १५ । ॐ ऐं प्रीं नमः १६ । ॐ ऐं व्लूं नमः १७ । ॐ ऐं आं नमः १८ । ॐ ऐ औं नमः १९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २० । ॐ ऐं क्रीं नमः २१ । ॐ ऐं द्रां नमः २२ । ॐ ऐं श्रीं नमः २३ । ॐ ऐं स्लीं नमः २४ । ॐ ऐं क्लीं नमः २५ । ॐ ऐं स्लूं नमः २६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २७ । ॐ ऐं व्लीं नमः २८ । ॐ ऐं त्रों नमः २९ । ॐ ऐं ओं नमः ३० । ॐ ऐं श्रौं नमः ३१ । ॐ ऐं ऐं नमः

३२ । ॐ ऐं प्रं नमः ३३ । ॐ ऐं द्रूं नमः ३४ । ॐ ऐं क्लूं नमः ३५ । ॐ ऐं औं नमः ३६ । ॐ ऐं सूं नमः ३७ । ॐ ऐं चें नमः ३८ । ॐ ऐं हैं नमः ३९ । ॐ ऐं ब्लीं नमः ४० । ॐ ऐं क्षां नमः ४१ ।

॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं व्रीं नमः २ । ॐ ऐं ओं नमः ३ । ॐ ऐं औं नमः ४ । ॐ ऐं ह्लां नमः ५ । ॐ ऐं श्रीं नमः ६ । ॐ ऐं श्रां नमः ७ । ॐ ऐं ओं नमः ८ । ॐ ऐं प्लीं नमः ९ । ॐ ऐं सौं नमः १० । ॐ ऐं ह्लीं नमः ११ । ॐ ऐं क्रीं नमः १२ । ॐ ऐं ल्लूं नमः १३ । ॐ ऐं क्लीं नमः १४ । ॐ ऐं ह्लीं नमः १५ । ॐ ऐं प्लीं नमः १६ । ॐ ऐं श्री नमः १७ । ॐ ए ल्लीं नमः १८ । ॐ ऐं श्रूं नमः १९ । ॐ ऐं ह्लीं नमः २० । ॐ ऐं त्रूं नमः २१ । ॐ ऐं हूँ नमः २२ । ॐ ऐं ह्रां नमः २३ । ॐ ऐं प्रीं नमः २४ । ॐ ऐं ॐ नमः २५ । ॐ ऐं सूं नमः २६ । ॐ ऐं ह्लौं नमः २७ । ॐ ऐं यौं नमः २८ । ॐ ऐं आं ल्ही नमः २९ । ॐ ऐं ओं नमः ३०

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चे १०८ ॥

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥

इति तन्त्ररूपेणपरिणताश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती

।। समाप्ता ।।

इस प्रकार श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती का पाठ पूरा होने पर प्रथम नवार्ण-मन्त्र का जप करके पश्चात् तान्त्रिक देवी सूक्त का पाठ करे। सभी कार्य नवार्ण मन्त्र के न्यास आदि तथा सप्तशती न्यास आदि पाठ आरम्भ के पूर्व की तरह होंगे।

।। अथनवार्णमन्त्रजपविधिः ।।

।। विनियोगः ।।

श्री गणपतिर्जयति ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दान्सि श्रीमहा-काली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं वींजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री महाकाली मसालक्ष्मी महा-सरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादिन्यासः ।।

ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनु-ष्टुप्छन्दोभ्योनमः, मुखे। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्योनमः हृदि। ऐं वीजायनमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इति मूलेनकरौ संशोध्य..........

।। करन्यासः ।।

ॐ ऐं अङ्गुण्ठाभ्यान्नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यान्नमः। ॐ चाचुण्डायै अनामिकाभ्या-

न्नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यान्नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ।

॥ अक्षरन्यासः ॥

ॐ ऐं नमः, शिखाग्राम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे ।
ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं
नमः वामकर्णे ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः
वामनासापुटे ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्चें नमः, गुह्ये ।

एवं विन्यस्याष्टवारम्मूलेन व्यापकं कुर्यात् ।

॥ दिङ्न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यैनमः । ॐ ऐं आग्नेय्यैनमः । ह्रीं दक्षिणायै
नमः ॐ ह्रीनैंर्ऋत्यैनमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यैनमः । ॐ क्लीं
वायव्यैनमः ॐ चामुण्डायै उदीच्यैनमः । ॐ चामुण्डायै
ऐशान्यैनमः । ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायैनमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे भूम्यैनमः ।

॥ ध्यानम् ॥

खड्गंचक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलंभुशुण्डींशिरः,
शंखंसंदधतींकरैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवमहाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते ह्रौकमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् । १
अक्षस्रक्परशुंगदेषुकुलिशं पद्मंधनुःकुण्डिकां,
दण्डंशक्तिमसिञ्चचर्मजलजंघण्टांसुराभाजनम् ।

शूलंपाशसुदर्शनेचदधतीं हस्तैःप्रसन्नाननां,
सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
घण्टाशूलहलानिशङ्खमुशले चक्रंधनुःसायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतांमहा,
पूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

सङ्केत–इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करे। पश्चात् १०८ या १००८ बार नवार्ण मन्त्र का जप करना चाहिये। जप करने के पहले ही 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायैनमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके विम्नलिखित मन्त्रों से माला की प्रार्थना करे—

ॐ मांमालेमहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वगस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥
ॐ अविघ्नं कुरुमालेत्वं गृह्णामि दक्षिणेकरे ।
जपकालेचसिद्ध्यर्थम् प्रसीदममसिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय स्वाहा ।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करे। जप पूरा करके जप को भगवती को समर्पित करते हुये कहें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रासादान्महेश्वरि ।

पश्चात् नीचे लिखे अनुसार सप्तशती का न्यास करे।

॥ इतिनवार्णजपविधिः समाप्तः ॥

अथतन्त्रदुर्गासप्तशतीन्यासः

।। करन्यासः ।।

ॐ ह्रींअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ॐ चंतर्जनीभ्यान्नमः । ॐ डि मध्यमाभ्यान्नमः । ॐ कां अनामिकाभ्यान्नमः । ॐ यैं कनिष्ठकाभ्यान्नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ।

।। हृदयादिन्यासः ।।

ॐ ऐं स्लूं नमः खड्गिनीशूलिनीघोरा चक्रिणी गदिनीतथा ।
ॐ ऐं नों नमः शङ्खिनी चापिनी वाणभुशुण्डी परिघायुधा ।
हृदयायनमः ।

ॐ ऐं फ्रें नमः ॐ शूलेनपाहि नो देवि पाहिखड्गेनचाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च । शिरसेस्वाहा ।
ॐ ऐं क्रीं नमः ॐ प्राच्यांरक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिकेरक्ष दक्षिणें ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ।। शिखायैवौषट् ।
ॐऐं म्लूं नमः ॐ सौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्येविचरन्तिते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्माँस्तथा भुवम् ।। कवचायहुम् ।
ॐ ऐंघ्रें नमः ॐ खड्गशूलगदादीनि यानिचास्त्राणितेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्षसर्वतः ।। नेत्रत्रयायवौषट्
ॐ ऐं श्रूं नमः ॐ सर्वस्वरूपेसर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।। अस्त्रायफट् ।

॥ ध्यानम् ॥ १

विद्युद्दामसमप्रभांमृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिःकरवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाञ्चापङ्गुणन्तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरांदुर्गान्त्रिनेत्राम्भजे ॥

अर्थ–जिनके अङ्‌ की शोभा विजली के समान है, जो सिह की सवारी पर बैठीं हुई भयङ्कर प्रतीत होती हैं, हाथों में तलवार व ढाल लिये ऐसी अनेक कलाए जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अपने हाथों में चक्र गदा, तलवार, ढाल वाण धनुष, पाश, और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुये हैं, जिनका स्वरूप-अग्निमय है तथा जिनके माथे पर चद्रमा का मुकुट शोभा पा रहा है, ऐसी-तीन नेत्र वाली श्री दुर्गा देवी का ध्यान करता हूँ ।

इस प्रकार श्री दुर्गा देवी का ध्यान करके आगे लिखा तन्त्र रूप देवी सूक्त का पाठ करे ।

—०⁀०—

॥ तन्त्ररूपन्देवीसूक्तम् ॥

ॐ ऐं ह्सों नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २ । ॐ ऐं श्रीं नमः ३ । ॐ ऐं हूं नमः ४ । ॐ ऐं क्लीं नमः ५ । ॐ ऐं रौं नमः ६ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ७ । ॐ ऐं म्लीं नमः ८ । ॐ ऐं प्लूं नमः ९ । ॐ ऐं स्हौं नमः १० । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ११ । ॐ ऐं ग्लूं नमः १२ । ॐ ऐं व्रीं नमः १३ । ॐ ऐं सौः नमः १४ । ॐ ऐं लूं नमः १५ । ॐ ऐं ल्लूं नमः १६ । ॐ ऐं द्रां नमः १७ ।

ॐ ऐं क्सां नमः १८ । ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः १९। ॐ ऐं ग्लौं
नमः २० । ॐ ऐं स्कें नमः २१ । ॐ ऐं त्रूं नमः २२ ।
ॐऐं स्क्लूं नमः २३ । ॐ ऐं क्रौं नमः २४ । ॐ ऐं श्रीं
नमः २५ । ॐ ऐं म्लूं नमः २६ । ॐ ऐं क्लूं नमः २७ ।
ॐऐं शां नमः २८ । ॐऐं ल्हीं नमः २९ । ॐऐं स्त्रूं नमः ३० ।
ॐ ऐं ल्लीं नमः ३१ । ॐ ऐं लीं नमः ३२ । ॐ ऐं सं
नमः ३३ । ॐ ऐं लूं नमः ३४ । ॐ ऐं ह्सूं नभः ३५ । ॐ ऐं
श्रूं नमः ३६ । ॐ ऐं जूं नमः ३७ । ॐ ऐं ह्स्लरीं नमः ३८ ।
ॐ ऐं स्क्रीं नमः ३९ । ॐ ऐं क्लां नमः ४० । ॐ ऐं श्रूं
नमः ४१ । ॐ ऐं हं नमः ४२ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ४३ । ॐ
ॐ ऐं क्स्रूं नमः ४४ । ॐऐं द्रौं नमः ४५ । ॐ ऐं क्लूं
नमः ४६ । ॐ ऐं गां नमः ४७ । ॐ ऐं सं नमः ४८ । ॐऐं
ल्स्रां नमः ४९ । ॐऐं फ्रीं नमः ५० । ॐ ऐं स्लां नमः ५१ ।
ॐ ऐं ल्लूं नमः ५२ । ॐ ऐं फ्र नमः ५३ । ॐ ऐं ओं
नमः ५४ । ॐ ऐं सम्लीं नमः ५५ । ॐ ऐं ह्रां नमः ५६ ।
ॐऐं ॐ नमः ५७ । ॐऐं ह्लूं नमः ५८ । ॐ ऐं हूं
नमः ५९ । ॐ ऐं नं नमः ६० । ॐऐं स्रां नमः ६१ । ॐऐं
वं नमः ६२ । ॐऐं मं नमः ६३ । ॐ ऐं म्क्लीं नमः ६४ ।
ॐ ऐं शां नमः ६५ । ॐ ऐं लं नमः ६६ । ॐऐं भौं नमः
६७ । ॐऐं ल्लूं नमः ६८ । ॐ ऐं हौं नमः ६९ । ॐऐं ईं
नमः ७० । ॐऐं चें नमः ७१ ॐ ऐं ल्क्रीं नमः ७२ । ॐ ऐं

ह्ल्रीं नमः ७३ । ॐ ऐं क्ष्म्लरीं नमः ७४ । ॐ ऐं पूं नमः ७५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ७६ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ७७ । ॐ ऐं भ्रूं नमः ७८ । ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ७९ । ॐ ऐं आं नमः ८० । ॐ क्रूं नमः ८१ । ॐ ऐं त्रूं नमः ८२ ।

।। इति तन्त्ररूपन्देवीसूक्तम ।।

तन्त्र रुप देवी सूक्त का पाठ करनेकेपश्चात् भगवती की प्रार्थना करता हुआ क्षमा याचना करके पाठ-कार्य समाप्त करें ।

हरिविरञ्चिमहेश्वरपूजिताम्-
भगवतीञ्जनदुर्गतिहारिणीम् ।
सकलतन्त्रमयीञ्जगदीश्वरीं -
सुखमयीञ्जगताञ्जननींभजे ।।१।।
सर्वार्थसाधनकरीम्महतीमुदारां-
स्वर्गापवर्गगतिदांकरुणावताराम् ।
संसारतारणपरांहृतपापभारां-
दुर्गान्नमामि शिरसाऽहमनन्तसाराम् ।।१।।

।। क्षमा-प्रार्थना ।।

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशंमया ।
दासोऽयमिति मांमत्वाक्षमस्व परमेश्वरि ।।१।।
आवाहनंनजानामिनजानामिविसर्जनम् ।
पूजांचैवनजानामिक्षम्यतां परमेश्वरि ।।२।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।

यत्पूजितंमयादेवि परिपूर्णंतदस्तुमे ॥३॥
अपराधशतंकृत्वा जगदम्बेतिचोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥
सापराधोऽस्मिशरणं प्राप्तस्त्वांजगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहंयथेच्छसितथाकुरु ॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्यायन्न्यूनमधिकंकृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीदपरमेश्वरि ॥६॥
कामेश्वरिजगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाणार्चामिमांप्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वंगृहाणास्मत्कृतंजपम् ।
सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥८॥

जनदम्बा का प्रधान—नवार्ण मन्त्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।

अर्थ—हेचित्स्वरूपिणी महासरस्वती! हेसत् स्वरूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्दरूपिणि महाकाली । ब्रह्म विद्या पाने के लिए हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं ।

सरल अर्थ-हे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपिणी (दुर्गा देवी) ममोऽभीष्ट पूर्ण कीजे ।

॥ श्री दुर्गा माता की आरती ॥

जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
जग जननी जगकी विस्तारिनि, शरणागत भय-संकट हारिनि ।
दिव्य धाम मणिदीप विहारिनि, नाम जपत अघपुंज नशाता ॥

जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
मधु—कैटभ–महिषासुर मारे, दीन-दुखी जनके दुःख टारे ।
शारद—शेष कहत गुन हारे, दयामयी—-भवसागर—-त्राता ।।
जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
ध्यावैं निन हरि-विधि-त्रिपुरारी, सुर-नर-असुर विविधतनुधारी ।
निशि दिन पूजा करैं तुम्हारी, जग जड़-चेतन-सबकी माता ।।
जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
हम—कपटी—कपूत—-बहुपापी, लोभी—छली–अधिकपरितापी ।
काम–क्रोध–ममता—उग्व्यापी, चरण—शरण—दीजै अब माता ।।
जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
बिनु सहाय-जननी सुत तेरे, दीन दुःखी विपदा के घेरे ।
गुण–न–एक–अवगुण बहुतेरे, करहु कृपा करुणामयि माता ।।
जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलदाता ।
जे जन तुम्हरी आरति गावैं, ताल—-मजीर—-मृदंग बजावैं ।
मन वांछित नाना सुख पावै, ऋद्धि–सिद्धि–शुभ–सम्पत्ति दाता ।।
जय जगदम्बे दुर्गेमाता, आरति आनन्द मंगलता ।

।। लेखक परिचय ।।

ईटावारव्यसुमण्डलान्तर्गताऽछल्दारव्यपत्रालया–
दैशान्यान्दिशिसंस्थितेऽतिविदितेक्रोशेद्वितीयेशुभे ।
विद्वद्वृन्दयुतेसलेमपुरकेग्रामेसुदेवालये–
वासन्तत्रचकुर्वतासुलिखिताप्राकाशिचैषाशुभा ।।१।।
० ३ ० २ (२०३०)
गगनरामखनेत्रसुवत्सरे–
बुधदिनेमधुमासिसितेमया ।

भगवतीपदयोर्नवमीतिथौ–
जगतितन्त्रमयोसुसमर्पिता ।।
।। इति श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ।।२।।
संवत् २०३० चैत्रसुदि नवमी वुधे ।
ता० ११-४-७३

अनुभव-सिद्ध तान्त्रिक मन्त्र

जप के लिये व दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुटित करने के लिये ।

१. सामूहिक कल्याण के लिये–ॐ ऐं दीं नमः ।
२. विश्व के अशुभ तथा भय विनाश करने के लिये– ॐ ऐं प्रें नमः ।
३. विश्व रक्षा के लिये–ॐ ऐं यां नमः ।
४. संसार के अभ्युदय के लिये–ॐ ऐं श्वं नमः ।
५. विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिये–ऐं श्रीं नमः ।
६. विश्व के पाप व ताप आदि के निवारण के लिए– ॐ ऐं व्रूं नमः ।
७. समस्त विपत्ति नाश के लिये तथा कल्याण के लिये– ॐ ऐं ग्लौं नमः ।
८. विपत्ति नाश और शुभ कल्याण के लिये-ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः ।
९. भय नाश के लिये– (क) ॐ ऐं श्रूं नमः ।

१०. पाप नाश के लिये—ॐ ऐं त्रैं नमः।
११. सर्व रोग नाश के लिये—ॐ ऐं ह्रौं नमः।
१२. मोक्ष प्राप्ति के लिये—ॐ ऐं प्रें नमः।
१३. स्वर्ग और मुक्ति के लिये—ॐ ऐं श्रूं नमः।
१४. स्वर्ग और मुक्ति के लिये—ॐ ऐं प्रें नमः।
१५. बाधा शान्ति के लियें—ॐ ऐं सें नमः।
१६ सब प्रकार के कल्याण के लिये—ॐ ऐं स्ल्कीं नमः।
१७. शक्ति प्राप्ति के लिये—ॐ ऐं प्रीं नमः।
१८. भगवती की प्रसन्नता के लिये—ॐ ऐं ल्लू नमः।
१९. विविध उपद्रव से बचने के लिये—ॐ ऐं ह्रौं नमः।
२०. सुख के लिये—ॐ ऐं सः नमः
२१. समस्त भय दूर करने के लिये—ॐ ऐं इं नमः।
२२. सत्रु नाश के लिये—ॐ ऐं सूं नमः।
२३ समस्त ग्रह पीड़ाओं के नाश के लिये तथा दुःस्वप्न नाश के लिये—ॐ ऐं ह्रीं नमः।
२४. दुष्ट लोगों की शक्ति-नाश के लिये तथा भूतप्रेतादि नाश के लिये—ॐ ऐं औं नमः।
२५. संग्राम में भय रहित होने के लिये तथा सत्रुनाश के लिये—ॐ ऐं सूं नमः।
२६. वालरक्षो के लिये एवं कल्याण के लिये-ॐ ऐं आं नमः।
२७. पापनाश के लिये तथा रोगनाश के लिये-ॐ ऐं द्रां नमः।

२८. दारिद्र्य नाश के लिये—ॐ ऐं ल्कीं नमः ।

२९. शत्रु भय निवारण के लिये—ॐ ऐं क्रूं नमः

३०. समस्त उत्पात तथा महामारी आदि के नाश के लिये - ॐ ऐं प्रां नमः ।

३१. धन-धान्य-पुत्र आदि प्राप्ति के लिये तथा समस्त बाधायें निवारण के लिये-ॐ ऐं सः नमः ।

३२. त्रैलोक्य रक्षा के लिये एवं समस्त दुष्ट जनों की दुष्टता ॐ ऐं ज्स्ह्लीं नमः ।

३३. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये तथा विद्या-प्राप्ति के लिये— ॐ ऐं ह्लां सम: ।

३४. भगवती के प्रसन्नता की लिये तथा कल्याण के लिये- नाश के लिये-ॐ ऐं म्लीं नमः ।

३५. बुद्धि सन्मार्ग पर लाने के लिये-ऐं ल्लूं नमः ।

३६. सर्प-अग्नि-जल तथा शत्रु आदि से रक्षा के लिये— ॐ ऐं हौं नमः ।

३७. यशोवृद्धि तथा समस्त कल्याण के लिये-ॐऐं त्रें नमः।

३८. समस्त कार्य-सिद्धि के लिये—ॐ ऐं व्रूं नमः ।

३९. ,, —ॐ ऐं स्फ्रूं नमः ।

४०. ,, —ॐ ऐं ह्लीं नमः ।

४१. ,, —ॐ ऐं लं नमः ।

४२. ,, —ॐ ऐं गीं नमः ।

४३. ,, —ॐ ऐं यं नमः ।

४४. ,, —ॐ ऐं ह्लीं नमः ।

४५. ,, —ॐ ऐं ह्लं नमः ।

४६. समस्तपीड़ा शान्ति के लिये—ॐ ऐं फ्रैं नमः ।

सङ्केत-- १२५००० जप करना चाहिये । अथवा श्री दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुट लगा कर १०० पाठ करे ।। संसार में कोई भी कठिन कार्य नहीं है जो सिद्ध न होसके । अनेकों वार के-अनुभव प्राप्त हैं ।

।। इत्यनुभवसिद्धतान्त्रिकमन्त्र विवरण समाप्त ।।

— —:o:— —

परिशिष्ट विषयः

भगवान शिवके प्रधान दो मन्त्र हैं १ षडक्षर-दूसरा पञ्चाक्षर। शिवपुराण में दोनों मन्त्रों का विशेष महत्व वर्णन किया है-

प्रमाण—अरुद्रो वा सरुद्रो वा सकृत्पञ्चाक्षरेणवा।
अपूज्यः पूजितोवापि मूढोवा मुच्यतेनरः ॥
षडक्षरेणवा देवि तथा पञ्चाक्षरेणवा। इत्यादि

अर्थ—

किसीने चाहे दीक्षा ली हो चाहे न ली हो-पतित हो अथवा मूर्ख-यदि श्रद्धापूर्वक एक वार भी (ओं नमः शिवाय) इस षडक्षर मन्त्र का अथवा (नमः शिवाय) इस मन्त्र का जप करता है वा पूजन करता है तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

इसी प्रकार षडक्षर राम मन्त्र का भी बड़ा महत्व शास्त्रों में वर्णित है।

(श्रीरामायनमः) षडक्षररामनन्त्र है।

(रांरामायनमः) यह भी षडक्षर राममन्त्र है।

प्रमाण—सर्वेषांराममन्त्राणाम्मन्त्रराजः षडक्षरः।
तारकंब्रह्मवेदोक्तं तेनपूजा प्रशस्यते ॥ (अ०सं०३३अ०)

अर्थ—

आगे सर्वसाधारण जनता के लिये कुछ देवताओं के मन्त्र लिखे जा रहे हैं-उनका जप करने से सर्वाभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने में कोई भी सन्देह नहीं है।

शिवमन्त्र

(ॐ नमः शिवाय) वा (नमः शिवाय)

राममन्त्र

(श्रीं रामायनमः) वा (रांरामायनमः) वा (ओं ह्लीं श्रीं क्लीं एँ रां) वा (राम)वा(रामचन्द्र)वा (हं जानकी वल्लभायस्वाहा) वा (श्री रामजयरामजयजयराम)

सन्तानगोपालमन्त्र भेद प्रकार

(१)

ॐ क्लीं श्रीं ह्लीं जीं ॐ भूर्मुवःस्वः ॐ देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते।देहि मेंतनयङ् कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः स्वः भुवः भूः ओं जीं ह्लीं श्रीं क्लीं ॐ।

"अथवा" (२)

"ॐ" क्लीं देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।
देहि में तनयङ् कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः क्लीं ओम् ॥

इत्यादि मतभेद हैं ।

"अथवा" (३)

"ॐ" देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।
देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः ।

विन्ध्यवासिनी देवी का मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ पुरुषिकिं स्वपिषिभयम्मेसमु स्थितम् ।
यदिशक्यमशक्यंवा तन्मेभगवतिशमयस्वाहा ॥

दुर्गादेवीमन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

महामृत्युञ्जयमन्त्र (त्र्यम्बकमन्त्र)

ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् । ऊर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ ।

संकेत—महामृत्युञ्जय मन्त्र में कुछ लोग (ॐ) तीन बार लगाते हैं ।

मृत्युञ्जयमन्त्र

त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीमामृतात् ।।

अन्नपूर्णामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णेस्वाहा

कुबेरमन्त्र

ॐ यक्षायकुबेरायवैश्रवणायधनधान्याधिपतयेधन्यधान्यसमृद्धिम्मे देहिदापयस्वाहा ।

कृष्णमन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा । वा (क्लींकृष्णक्लीं) वा (क्लींकृष्णायगोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा ।) वा (ओंनमोभगतेवासुदेवाय)

कार्तवीर्यमन्त्र

ओं फ्रों चीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनायनमः ।

सङ्केत—इस मन्त्र के जप से नष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है ।

लक्ष्मीमन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यैनमः ।

महालक्ष्मीमन्त्र

ओं श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै नमः (स्वाहा)

बागीश्वरी मन्त्र

ह्रीं वद वद वाग्वादिन्यैस्वाहा ह्रीं ।

वगलामुखीमन्त्र

ओं ह्लीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा ।

वटुकभैरवमन्त्र

ॐ वटुकाय, आपदुद्धरणाय कुरुकुरु वटुकायह्रां ।

नारायणमन्त्र

ओंनमोनारायणाय ।

गङ्गामन्त्र

ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय स्वाहा ।

महाकालीमन्त्र

(फ्रेंकरिण्याम्) वा (ॐ फ्रें फ्रें हूँ हूँ पशुग्रहाण हूँ फट् स्वाहा। वा) ॐ हर हर स्तम्भस्तम्भ कील कील स्वाहा।

महागणपतिमन्त्र

[१] ॐ श्री ह्रींग्लौं गंगणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानयस्वाहा।

[२] "ॐवक्रतुण्डायहुँ" इतिवा गणेशमन्त्रः

[३] वक्रतुण्डैकदंष्ट्रायक्लींह्रीं श्रीं गंगणपतयेवरवरदसर्वजनंमे वशमानयस्वाहा। यह त्रैलोक्य वश करने का मन्त्र है (मन्त्रमहादधौ)

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

ॐ हस्तपिशाचि लिखे स्वाहा।

भुवनेश्वरीमन्त्र

(ह्रीं) वा (ऐं ह्रीं श्रीं)

।। इति देवताओं के मन्त्र समाप्त ।।

सङ्केत—यहाँ से आगे कुछ देवताओं की गायत्री लिखी जायगी।

रुद्रगायत्री—तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि तन्नोरुद्र प्रचोदयात्।

महालक्ष्मीगायत्री—महालक्ष्म्यैविद्महे महाश्रियै धीमहितन्न श्रीःप्रचोदयात्।

हनुमद्गायत्री—हनुमतेद्मिहे आञ्जनेयाय धीमहि तन्नोवी प्रचोदयात्।

दुर्गागायत्री–कात्यायन्यैविद्महे कन्याकुमार्य्यै धीमहि तन्नो
दुर्गाप्रचोदयात् ।

वागीश्वरीगायत्री–ऐं वागीश्वर्य्यैविद्महे क्लींकामेश्वर्य्यै
धीमहि । सौस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।

बगलामुखीगायत्री–बगलामुख्यैविद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

अन्नपूर्णागायत्री–भगवत्यैविद्महे माहेश्वर्य्यै धीमहि तन्नो
अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।

रामगायत्री–दाशरथयेविद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो
रामः प्रचोदयात् ।

रविगायत्री–सप्ततुरगायधीमहि सहस्त्रकिरणाय धीमहि तन्नो
रविः प्रचोदयात् ।

कृष्णगायत्र–दामोदरायविद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः
कृष्णः प्रचोदयात् ।

ज्वरगायत्र–भस्मायुधायविद्महेंऐंक्लीं एकदन्ष्ट्राय धीमहि
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ।

॥ इति कुछ देवताओं की गायत्री विषय समाप्त ॥

॥ मन्त्रों के विषय पर संक्षिप्त विवेचन ॥

शारदातिलक में मन्त्र तीन प्रकार के वर्णन किये हैं–पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ।

१–जिस मन्त्र के अन्त में हुंफट् हो–उसे पुरुष मन्त्र अर्थात् पुल्लिङ्ग कहते हैं ।

२–जिस मन्त्र के अन्त में स्वाहा हो उस मन्त्र को स्त्री मन्त्र अर्थात् स्त्री लिङ्ग कहते हैं ।

३–जिस मन्त्र के अन्त में नमः हो उस मन्त्र को नपुंसक मन्त्र अर्थात् नपुंसक लिङ्ग कहते हैं ।

मन्त्र महोदधि में भी इसका विवेचन सुचारु रीति से किया गया है ।

१–जिस मन्त्र के अन्त में (वषट्) हो फट् हो उसे पुरुष मन्त्र जानना चाहिये ।

२–जिस मन्त्र के अन्त में (वौषट्) व (स्वाहा) हो उसे स्त्री मन्त्र जानना चाहिये ।

३—जिस मन्त्र के अन्त में (नमः) हो उसे नपुंसक मन्त्र जानना चाहिये । कर्म भेद से मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिये–जैसे–वशीकरण, उच्चाटत आदि में पुरुष मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये । साधारण छोटे कर्म के लिये व रोगनाश आदि के लिये स्त्री मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये । अभिचार में नपुंसक मंत्र का प्रयोग करना चाहिए । शारदातिलक व मन्त्रमहोदधि में विशेष विस्तार से लिखा है ।

।। मन्त्रों के भेद ।।

१ जाग्रत २ सुषुप्त ३ मित्र ४ शत्रु ५ सौम्य ६ क्रूर ७ अतिक्रूर ८ छिन्न ९ रुद्र १० शक्तिहीन ११ पराङ् मुख १२ वधिर १३ नेत्रहीन १४ दग्ध १५ त्रस्त १६ मलिन १७ मदोन्मत्ता १८ मूर्छित १९ प्रध्वस्त २० बालक २१ कुमार २२ युवा २३ प्रौढ़ २४ वृद्ध २५ केकर २६ कूट ये मन्त्रों के भेद हैं-दुष्ट मन्त्रों का त्याग करके शुभ मन्त्र ग्रहण करना चाहिये । इनका विस्तार नारदपञ्च-रात्र आदि ग्रन्थों में है ।

मन्त्रों में अक्षरों के अनुसार ५ भेद

१–एक अक्षर वाला मन्त्र "पिण्ड" कहलाता है ।

२–दो अक्षर वाला मन्त्र 'कर्तरी' कहलाता ।

३–तीन अक्षर से नव अक्षर तक के मन्त्र को "बीज" कहना चाहिये ।

४–दस अक्षर से बीस अक्षर तक के मन्त्र को "मन्त्र" कहना चाहिये ।

५– बीस अक्षर से अधिक अक्षर वाला मन्त्र "मालामन्त्र" कहलाता हैं। 'नारदपञ्चरात्र द्वितीय रात्र के ७वें अध्याय में तथा" मन्त्रमहोदधि और शारदातिलक में भी वर्णन आया है ।

पुंल्लिग आदि मन्त्र विचार

मन्त्राः पुन्देवताज्ञेया विद्या स्त्री देवताः स्मृताः ।
पुंस्त्रीनपुंसकात्मानो मन्त्राः सर्वेसमीरिताः ।
पुम्मन्त्राहुंफडन्ताः स्युर्द्विठान्ताःस्युः स्त्रियोमताः ।
नपुंसकाः नमोन्ताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा ॥
इतिशारदा तिलक ।

स्त्रीपुंनपुंसकाः प्रोक्तामनवस्त्रिविधाबुधैः ।
वषडन्ताः फडन्ताश्च पुमांसो मनवःस्मृताः ॥१॥
वौषट् स्वाहान्तगानार्यो हुंनमोन्ता नपुंसकाः ।
इतिमन्त्रमहोदधौ ।

पुंल्लिग-स्त्रीलिंग-नपुंसकलिंग भेदानुसार मन्त्र

१– जिस मन्त्र के अन्त में=वषट्-फट्-हुफट् हों वह पुंल्लिग कहलाता है ।
२– जिस मन्त्र के अन्त में=वौषट्-स्वाहा हों वह स्त्रीलिङ्ग कहलाता है ।
३ - जिस मन्त्र के अन्त में=हुंम् व नमः हो वह नपुंसकलिङ्ग कहलाता है ।

(ओं शब्द का प्रयोग किन मन्त्रों में नहीं करना चाहिए)

वाक्चैव कामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते ।
तदाद्येषु च मन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत् ॥१॥

अर्थ —

जिन-जिन मन्त्रों के आदि में बागबीज 'ऐं' कामबीज 'क्लीं' शक्तिबीज

'ह्रीं' श्रीवीज 'श्री' हो तो उन मन्त्रों में 'ॐ' कार नहीं लगाना चाहिए आदि में—ये वीज स्वयं ॐकार रूप हैं।

नवार्णमन्त्र के अतिरिक्त मन्त्रों में ओंकार लगाने का नियम

प्रणवाद्यङ् गृहस्थानांतच्शून्यन्निष्फलम्भवेत् ।
आद्यन्तयोवनस्थानांयतीनाम्महतामपि ।।१।।

अर्थ—

गृहस्थ को मन्त्र के आदि में प्रणव 'ओं' लगाना चाहिए बिना प्रणव के मन्त्र जपना निरर्थक होता है। वानप्रस्थ तथा यती आदि महात्माओं को आदि तथा मन्त्र के अन्त में इस प्रकार दो बार 'ओं' लगाना चाहिए यथा "ओनमः शिवाय शिवायनमः ओम्" अथवा ओं नम शिवाय ओम्।

जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि ।
अशून्यन्तुकरङ्कुर्यात् सुवर्णरजतैः कुशैः ।।

अर्थ—

जप में-होम में-दान में वेदपाठ आदि के स्वाध्याय में तथा पितृ-कर्म में अर्थात् तर्पण व श्राद्ध आदि में सुवर्ण-चाँदी-कुश इन तीनों से अथवा इनमें से किसी भी एक से युक्त हस्त अवश्य होना चाहिए अन्यथा सब कर्म निष्फल हो जाता है। आशय यह है कि पवित्री कुश की हो अथवा सोने या चाँदी का छल्ला या अंगूठी युक्त हस्त से कार्य करना चहिए।

।। नवार्णमन्त्रार्थसङ्केतः ।।

ओमिति

व्याख्या - सिद्धानाञ्चैवसर्वेषाम्वेदवेदान्तयोस्तथा
अन्येषामपिशास्त्राणान्निष्ठाप्योङ्कारउच्यते ।।

व्याख्या—अवधातुर्गतिकर्मा—प्रवेशकर्माचअव्यतेप्रविश्यते गुणैरिति ओम् अथवा अवति प्रविशतिगुणानिति ओम् । अवधातोः "अवतेष्टिलोपः" इत्यनेनोणादिसूत्रेण मन्प्रत्यये टिलोपे सति "ज्वरत्वर०" इत्यादि कृदन्त सूत्रण वकास्योपधायाश्चदूयोरुठोः सवर्णदीर्घत्वे गुणेसति । ओम्' इति सिद्ध्यति । अवतिरक्षति । जानाति-गच्छति व्याप्नोति । प्रकाशयति । प्रीणयति । वर्द्धयति । लीनङ्करोति । ददाति । हिनस्ति । आलिङ्गयति । प्रदर्शयति । दीप्यति इच्छति । चालयति । पात्रयति तर्पयति इत्यादयोऽनेकेऽर्थाः सन्ति । कृन्मेजन्त इत्यनेनाव्ययत्वम् । स्वारादिनिपातमव्ययम् ।

इतिसूत्रेणवाव्ययत्वम् ।।

अर्थ —

जो संसार से पार करे । जो संसार को अपने मन में लीन करे । जो अनेक सुख प्रदान करे । जो काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को नाश करे जो उपासक को अपने मन से सम्बन्धित करे । जो आत्मदर्शन करावे जो प्रकाश से अज्ञान नष्ट करे । जो प्राणियों को सन्मार्ग पर लगावे । । जो

संसार का चालक है जो सर्वज्ञ है जो निराकार है। जो समस्त चराचर का आधार है। इत्यादि ॐ के अनेक अर्थ है।

ओम् — यह अव्यय वाचक पद है, तीनों काल में तीनों लिंगों में सभी विभक्तियों में सदा एक सा रहने वाला है इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं हो सकता है। अतएव विकारी के साथ उसका प्रयोग नहीं होता है, केवल परमात्मा आदि में युक्त होता है।

ॐ इतिस्मरणादेव ब्रह्मज्ञानं परावरम्।
तदेकमोक्षसिद्धिञ्च तमेवामृतमश्नुतं ॥

॥ नवार्णमन्त्रः ॥

। "ॐ" ऐंह्रींक्लींचामुण्डायैविच्चे ।

नवार्ण मन्त्रका उद्धार देव्यथर्वशीर्षउपनिषत् में।
वाङ्-मया ब्रह्मसूस्तस्स्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ॥
सूर्योऽवामश्रोत्रविन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ॥
नारायणेन संमिश्रोवायुश्चाधरयुक्तथा ॥
विच्चेनवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ॥

॥ व्याख्या हिन्दी भाषा में ॥

वाक्=वाक् बीज-ऐं
माया=मायाबीज—ह्रीं
ब्रह्मसूः कामबीज—क्लीं
तस्मात्षष्टम्=कामबीज के ककार से छठा अक्षर च हुआ।
वक्त्रसमन्वितन्=दीर्घआकार से युक्त (च) चा हुआ।
सूर्य - सूर्यकाअथं मकार हुआ—म
अवामश्रोत्रम् = पच्चमस्वर—उकार हुआ इसमें मु-बना

विन्दुः=अनुस्वार लगाने से-मुम् सिद्ध हुआ ।

टात्तृतीयकः=टअक्षरसैतृतीयअक्षर–ड=हुआ ।

नारायणेनसंमिश्रः=दीर्घाकारसेयुक्तड–डा हुआ ।

वायुः=यकार को कहते हैं=य सिद्ध हुआ

अधरयुक्=अधरोष्ठकाअर्थ वारहवाँस्वर–ऐ हुआ-य में ऐ स्वरलगानेसे–यै सिद्ध हुआ ।

विच्चे=बिच्चेकासम्बन्ध करने से ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै-विच्चे, मन्त्रवना ।

नवार्णलो=नव-अर्णकः अर्ण शब्दका अर्थवर्ण है अर्थात् नववर्णवाला मन्त्र—नवार्णमन्त्र है ।

अण=काअर्थ मन्त्र है

=महदानन्ददायकः।=उपासकों को आनन्ददायक है ।

डामरतन्त्रोक्तनवार्णकाअर्थ

१ २ ३
श्लोक–निर्धूतनिखिलध्वान्ते ! नित्यमुक्ते ! परात्परे !
४ ५ ६ ७
अखण्डब्रह्मविद्यायै चित्सदानन्दरूपिणि ॥१

अनुसन्दध्महे नित्यं वयत्वांहृदयाम्वुजे । इत्थ विश-दयत्येषा कल्याणीयानवाक्षरी ॥२॥

व्याख्या–ऐंह्रीकलीं चामुण्डायै विच्चे यहनवार्णमन्त्र है इसमें–ऐं ह्रीं कलीं–चामुण्डायै—वित् – च – ई – एंमे

सात पद हैं। पूर्व के तीन पद सम्बोधन हैं। चामुण्डायै यह पद तादर्थ्य में चतुर्थी है। वित्–च–इ ये पद संबोधन रूपसे ऐं–ह्रीं–क्लीं–इनके विशेषण है डामर तन्त्रके प्रथमश्लोक में भी सात पद हैं-अतः नवार्णमन्त्र के सातपदों का अर्थ क्रमशः जान लेना चाहिये। जो पद विशेषण है उनको विशेष्य ऐं-ह्रीं-क्लीं में लगाकर अर्थ जानना चाहिये।

(इ) अस्य-आनन्दब्रह्मणः स्त्री ई तत्संवोधने ह्रस्वेकृते-इ -इति ऐसी व्युत्पत्ति जानना चाहिये अर्थात् आनन्द-ब्रह्म महिषि।

(चामुण्डायै) चमूं सेनांवियदादिसूमूहरूपां डाति (लाति) आदत्ते इति चामुण्डा। डलयोरभेदइति वोद्धव्यम्। पृषोदरादित्वात्सर्वंसुस्थमित्याहुः अखण्डब्रह्मविद्यैवचामुण्डापदस्यार्थमाहुरिति केचिदाचार्याः। अन्येतु-चामुण्डाशब्दो। मोक्ष-कारिणीभूतनिर्विकल्प वृत्तिविशेषपरः। चामुण्डायै अत्रतादर्थ्ये चतुर्थी ज्ञेया।

१- निर्धूतनिखिलध्वान्तत्वम्=ज्ञानेनैवाखिलाज्ञाननाशत्वम्–अर्थात् ज्ञानकेही द्वारा समस्त अज्ञाननाश अतएव चिद्रूप महासरस्वती वाग्भववीज ऐंसे संवोधित की जाती है।

२– नित्यमुक्तत्वम् = त्रिकालाबाध्यत्वकल्पितवियदादिप्रप ञ्चनिरासाधिष्ठानत्वम् अर्थात् त्रिकाल में सदा एक रूप तथा कल्पित सभीं प्रपञ्चों सं रहित। अतएव–सद्रूपात्मक महालक्ष्मी माया (ह्रीं) वीज से संबोधित की जाती है।

६– परात्परत्वम् =परउत्कृष्टःसर्वानुभवसंवेद्य आनन्द एव तस्यैवपुरुषार्थत्वात् । आत्मनःकामाय सर्वंप्रियं-भवतीतिश्रुत्या तदितरेषामपि तदर्थत्वेनानन्दस्यैव सविशेषितयापरत्वात् । सचमानुषानन्दमारभ्योत्तरोत्तरं शतगुणाधिक्येन श्रुतौ वहुविधोवर्णितः। तेषुपरमाति-शायी स एको ब्रह्मणअनन्द इति परमावधित्वेनाम्नात एवपरात्परत्वम् । अर्थात् मनुष्यों के आनन्द से लेकर उत्तरोत्तर असङ्खय आनन्दों से युक्त परमानन्द स्वरूप। अतएव–आनन्द स्वरुप प्रधान महाकाली कामवीज (क्लीं) से संवोधित की जाती है।

सच्चिदानन्दात्मक ब्रह्मरूपत्वादेव शक्तेरपित्रिरूपत्वम् सुस्पस्टमेव=अर्थात् सच्चिदानन्द रूप होने से शक्ति के भी तीन रूप (ऐं) महासरस्वती (ह्रीं) महालक्ष्मी (क्लीं) महाकाली हुये।

त्वांहृदयकमले अनुसंदध्महे अर्थात् हृदय कमल में चिन्तन करता हूँ अथवा धारण करता हुँ।

नवार्ण मन्त्र का अथ—हेचित् स्वरूपिणी सरस्वती ! हे सत्स्वरुपिणी महालक्ष्मी ! हेआनन्दस्वरूपिणी महाकाली ! ब्रह्मविद्या पाने के लिये हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं।

सरल अर्थ – हे महाकाली—महालक्ष्मी—महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गादेवी आपको नमस्कार है हमारा मनोऽभीष्ट पूर्ण कीजै।

। नर्वाण मन्त्र में ओम् लगाने का विचार ।

१ २ ३ ४

श्लोक—वाक् चैवकामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्चकथ्यते।
तदाद्येषु चमन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत्।

अर्थ—जिन मन्त्रो के आदि में १ ऐं, २ कलीं ३ ह्रीं ४ श्रीं, हों तो उन मन्त्रों कै आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिये। अतः नवार्ण मन्त्र में ॐ नहीं लगाना चाहिये। हम लोगों की यही गुरु परंपरा है।

सङ्केत—नवार्णमन्त के ऋष्यादितथाषडङ्गन्यासादिका तथा जप का महत्व मेरुतन्त्र -कात्यायनी-तन्त्र-चिदम्वररहस्य आदि ग्रन्थों में विशेश विस्तार से वर्णन है। नवार्णमन्त्र तान्त्रिक ग्रन्थों में मन्त्रराज माना गया है। इससे बढ़कर दूसरा मन्त्र नहीं है।

ऐं—ह्रीं—कलीं—शक्तियों पर विमर्श

इन बीजों में 'ऐं' वीज असङ्ख्य शक्तियों का बीज है। दुर्गा का तो प्रधान बीज हे अतः ७०० मन्त्र जो दुर्गा सप्तशती के हैं उनमें प्रति मन्त्र में

'ऐं' बीज लगाने का विधान तान्त्रिक ग्रन्थों में हैं। निम्नलिखित कुछ ही देवताओं के 'ऐं' बीज का निर्णय लिखा जा रहा है।

प्रमाण–तन्त्र–कोष

'ऐं' यह बीज किन-किन शक्तियों का है कुछ ही नाम निर्देश किये जा रहे हैं।

दुर्गावीज
वाग् (सरस्वती) बीज
त्रिपुरा बीज
धन्या बीज
पद्मा बीज
मातृकेश्वर बीज
शक्ति बीज
विजया बीज
विश्वमोहिनी बीज
भैरवी बीज
आत्मज्ञान बीज
ऊर्ध्व बीज
अशुमान् बीज
इन्द्राणी बीज
गणेश्वरी बीज
चाण्डिकेश्वर बीज
जगद्योनि बीज
पीठेश बीज
सद्वीज
विमल बीज

कृषाङ्गिनी बीज
मात्राद्वादशी बीज
विभु बीज
विभुति बीज
अधरोष्ठ बीज
परब्रह्म बीज
निरञ्जन बीज
मूर्ध बीज
रमण बीज
धाम बीज
भौतिक बीज
मातृकावीज
वर्मवीज
लोहिता बीज
चन्द्र बीज

सङ्केत–इनके अतिरिक्त और भी शक्तियों के बीज हैं।

(तन्त्रकोष से)

ह्रीं वीज का निर्णय	क्लीं वीज का निर्णय
लक्ष्मी वीज	काली बीज
करुणा वीज	कुसुमायुध वीज
भुवनेश्वरी बीज	कृष्ण बीज
भुवना बीज	कुन्ती बीज
रसज्ञा वीज	क्लेद बीज
वाणी वीज	त्रैलोकयमोहन बीज
क्षामा बीज	त्रिभूति बीज
सकला वीज	पञ्चशर वीज
शम्भु कान्ता वीज आदि	पञ्चास्य वीज
	मनोभूः वीज
	मनोहरी बीज
	मन्मथ वीज
	मार वीज
	भीनकेतु बीज आदि

(तन्त्र कोष से)

कुछ वीजमन्त्रों के अर्थ लिखे जा रहे हैं।

हौं–प्रसाद वीज है। हकारः=शिवः। ओकारः सदाशिवः। बिन्दुः=दुःख नाशकः।

अर्थ–शिव व सदाशिव की कृपा से मेरे समस्त दुःख नाश हों।

दु दुर्गा वीज है। दः दूर्गा। उकारः=रक्षा। विन्दु का अर्थ करो।

अर्थ–हे मादुर्गे मेरी रक्षा करो।

क्रीं—काली वीज अथवा कूर्पर वीर है। कः=काली। रः=ब्रह्म।
ई=माया। विन्दुः=विश्वमाता।

अर्थ—दुःखनाशक। ब्रह्म शक्ति रूपिणी महामाया काली मेरे दुःखों को नाश करो।

ह्रीं– शक्ति वीज अथवा मायावीज है। हः=शिवः। रः=प्रकृतिः।
ई=माया=विन्दु= दुःखः नाशकः अथवा विश्वमाता।

अर्थ– शिवयुक्त विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुःखों को नाश करो।

श्रीं=लक्ष्मी वीज है श=महालक्ष्मी। रः=धन सम्पत्ति। ई=तुष्टिः
विन्दुः=विश्वमाता अथवा दुःखनाशकः।

अर्थ=धन सम्पत्ति-तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दुःखों को नाश करो।

ऐं=सरस्वती=वीज है। ऐं=सरस्वती। विन्दु= दुःख नाशकः। देवी
सरस्वती मेरे दुःखों को नाश करो।

सङ्केत– ऐं यह बहुत देवताओं का भी वीज है।

क्लीं=कृष्ण वीज अथवा काम अर्थात् काली वीज है कः=कृष्ण।
कः=काली। लः=इन्द्रः। ई=तुष्टि आदि। बिन्दुः=विश्वमाता-
विन्दुः=दुःख नाशकः।

अर्थ– हे सर्वश्रेष्ठ मन्मथ श्रीकृष्ण मुझे सुख और शान्ति दो। अथवा–महामाया कालीमेरे समस्त दुःख दूर करो।

हूँ=वर्म वीज अथवा कूर्च वीज है। हः=शिवः। ऊ=भैरवः।
विन्दुः=सर्वोत्कृष्टः। विन्दुः=दुःख नाशक।

अर्थ– सर्वश्रेष्ठ भगवान् शिव मेरे दु:खों को नाश करो।

गं=गणेश वीज है। ग:=गणेश:। यिन्दु:=दु:खहर:। हे गणेश मेरे दु:ख नाश करो।

ग्लों=गणेश वीज है। ग:=गणेश। ल:=व्यापार:। ल:=तेज:। विन्दु:=दु:ख नाशक:।

अर्थ– हे ज्योतिर्मय भगवान् गणेश मेरे दु:खों को दूर करो।

क्ष्रौं=नृसिंह वीज है। क्ष:=नृसिंह:। र:=ब्रह्म। औ=ऊर्ध्वदन्त:। विन्दु:=दु:ख नाशक:।

अर्थ—हे ब्रह्म स्वरूप उर्ध्वदन्त नृसिंह मेरे दु:खों को नाश करो।

स्त्रीं=वधू वीज है। स: दुर्गोत्तारक:। त:=तारक:। र:=मुक्ति:। ई=माया। विन्दु:=दु:ख नाशक:। विन्दु:=विश्वमाता।

अर्थ– हे दु:खोत्तारिणी मुक्तिस्वरूपा-माता भगवती महामाया मेरी दु:खों से रक्षा करो।

सङ्केत– एक एें वीज के अनेक अर्थ हैं। कुछ लिख दिये हैं। तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गासप्तसती के ७०० मन्त्र एक तपोमूर्ति–परमवीतराग–परमहंस–परिब्राजकाचार्य्य महात्मा से संवत् २००० आश्विन मास में प्राप्त हुए थे। वे ७०० मन्त्र तथा अन्यान्य विशेष उपयोगी विषय सहित 'श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीं' के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। इनका पाठ करने से समस्त दुर्गापाठ का फल प्राप्त होता। इन ७०० वीज मन्त्रों के पाठ में कवच अर्गला कीलक-रहस्यत्रय शापोद्धार-

उत्कीलन-कुञ्जिका स्तोत्र आदि कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र का जप यथेच्छ आवश्यक है। पुस्तक "श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती" निःशुल्क मिलती है केवल डाकव्यय प्रथम भेजना होगा।

लेखकः—**शिवदत्त शास्त्री**

पुस्तक मगाने का पता—
श्री चन्द्रशेखकर त्रिपाठी
एम.ए.,एल.टी. (डी.जी.पी.) लेक्चरार
मकान नं० ७३ मोहाल ठाकुरान
मु० पोस्ट—लखना
जिला—इटावा (उ० प्र०)

प्रकाशक—श्री कुमुदेशचन्द्र जैन
४८/१६२, रेशमगली पचकूचा जनरल गंज,
कानपुर—१

10

श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती में अत्यावश्यक शुद्धाशुद्ध शब्दों की सूची

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
रारस्वती	सरस्वती	३	११
प्रार्थनाकीविशेषप्रार्थना	विशेषप्रार्थना	३	२४
पर्वर्द्धित	परिवर्द्धित	४	६
ॐ ह्ली ह्लीं	ॐ ह्लीं ह्लीं	५	२०
सर्पायुधायै	सर्वायुधायै	९	९
ॐ य	ॐ यं	९	१०
ह्ल फट्	ह्लींफट्	९	१०
महाहुति	महाहुतिं	९	१३
र क क	रकंकं	९	१६
सं श्रीसस	सं श्रींसंसं	९	२१
अम्बऽअम्बालि	अम्बेऽम्बालिके	१०	१९
रव्वाहा	स्वाहा	१०	१९
कामदीज [illegible]ठायै	कामबीजाधिष्ठायै	१०	२१
स्वरुपं	स्वरुपे	१२	५
दुगे	दुर्गे	१२	१६
सरस्वपैस्वाहा	सरस्वत्यैस्वाहा	२१	१४
ममहिपापनमः	मंमहिषायनमः	२१	२
ब्र ह्मयैनमः	ब्राह्मैनमः	२१	५
उत्कृत्तभैखायनमः	उन्मत्तभैरवायनमः	२१	१०
चर्तविंशतिदतेषु	चतुर्विंशतिदलेषु	२२	१
शक्रययैनमः	शक्तयेनमः	२२	५
वंलज्जायैनमः	लंलज्जायैनमः	२२	६
त्रित्रिशूलायनमः	त्रिंत्रिशूलायनमः	२२	१६
घतुष्कोणोषु	चतुष्कोणोषु	२३	५
यो योगिनीभ्यो	यों योगिनीभ्यो	२३	७

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
देवनावाह्य	देवानावाह्य	२३	९
सप्तशती	तन्त्रसप्तशती	२३	१७
सरस्वतो	सरस्वती	२४	१०
गुह्य	गुह्ये	२४	१८
उच्चारणकेक	उच्चारणकरके	२४	१२
कन्यास	करन्यास	२५	२
मध्याभ्यासऽ	मध्यमाभ्यान्नमः	२५	१४
वँयेहाथ	वाँयेहाथ	२६	१४
अग्निस्तत्व	अग्निस्तत्वं	३१	५
विष्णऋषि:	विष्णुऋषिः	३३	११
तृतीयोध्नाय	तृतीयोऽध्यायः	३६	२
रुद्रऋषिभ्य:	रुद्रऋषिभ्यः	४७	१५
ॐयैंनम:	ॐयैंनमः	४८	६
ॐच्चेनमः	ॐच्चेंनमः	४८	७
ॐ चामण्डायै	ॐचामुण्डायै	४८	१४
शूलभुशुण्डी	शूलंभुशुण्डीं	४८	१६
दण्डशक्ति	दण्डंशक्ति	४८	२१
अनेककलायें	अनेककन्यायें	५१	८
मगलदाता	मंगलदाता	२४	१९
तुम्रारी	तुम्हारी	५३	६
आरुति	आरति	५५	१६
श्रींक्लीं	श्रींक्लींॐ	६१	१०

नोटः— पुस्तकें मगवानें के दो पते हैं कृपया एक ही लिखे दोनों नहीं ।

श्रीमान् पूज्य पण्डित श्री शिवदत्त त्रिपाठी शास्त्री जी की रचित-अनुवादित व संशोधित पुस्तकों की सूची नीचे लिखी है।

१– श्रीदेवीस्तोत्रम्	भाषा टीका सहित
२– श्रीगुरुस्तोत्रम्	” ” ”
३– श्रीरामस्तोत्रम्	” ” ”
४– श्रीशिवस्तोत्रम्	” ” ”
५– श्रीहनुमत्स्तोत्रम्	” ” ”
६– श्रीकामदस्तोत्रम्	” ” ”
७– मन्त्रतत्वविवेचनम्	” ” ”
८– यन्त्रतत्वविवेचनम्	” ” ”
९– सावरमन्त्रतत्वविवेचनम्	” ” ”
१०– वेदान्ततत्वविवेचनम्	” ” ”
११– जीवनतत्वविवेचनम्	” ” ”
१२– श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम्	” ” ”
१३– श्रीवैयाकरणभूषणसारतत्वविवेचनम्	” ” ”
१४– श्रीशिवसूत्ररहस्यम्	” ” ”
१५– श्रीनारायणीशकुनावली	” ” ”
१६– हरिवंशपुराणश्रवणविधि	” ” ”
१७– शक्तिशीठनिर्णयः	” ” ”
१८– तन्त्रदुर्गासप्तशती	” ” ”
१९– श्रीगायत्रीतत्वनिर्णयः	” ” ”
२०– नतार्णमन्त्रार्थ सङ्केतः	” ” ”

मुद्रक- एलोरा प्रिन्टर्स, कानपुर-१ फोन : ४०५२७